TEXT CROSS WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180870
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 891.092/P18J. Accession No. H 258

Author पांडेय, प्रकाश (सं)

Title जोश मलीहाबादी

This book should be returned on or before the date last marked below.

1958

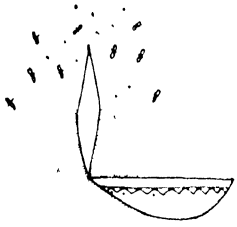

आत्माराम एन्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

जोश मलीहाबादी

और उनकी शायरी

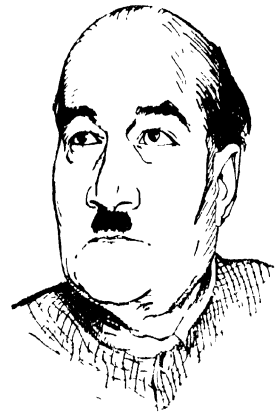

राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली

संपादक
प्रकाश पंडित

प्रथम संस्करण
जनवरी, १९५८

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

जीवनी	...	५—२०
चयन	...	२१—१०४
१. अल्हड़ कामनी	...	२३
२. दोपट्टे को मसले, बदन को चुराये	...	२५
३. तआकुब	...	२८
४. वादा-फ़रामोशी	...	३१
५. बिलकती यादे	...	३२
६. लाइलाज ताखीर	...	३३
७. सूनी जन्नत	...	३४
८. बरसी हुई आँखें	...	३६
९. वफादाराने-अजली का पयाम	...	३९
१०. मकतले-कानपुर	...	४१
११. गद्दार से खिताब	...	४२
१२. जवाले-जहांबानी	...	४३
१३. शिकस्ते-जिदां	...	४४
१४. हुब्बे-वतन और मुसलमान	...	४५
१५. इस्तकलाले-मैकदा	...	४६
१६. मातमे-आज़ादी	...	५२

१७. फुटकर	...	५३
१८. रिश्वत	...	५४
१९. आदमी	...	६०
२०. गजल	...	६२
२१. कुछ चुने हुए शेर	...	६४
२२. दुनिया में आग लगी है	...	७०
२३. बनवासी बाबू	...	७१
२४. साँस लो या खुश रहो	...	७३
२५. इतिक़ा	...	७४
	...	७७
२७. शानदार दावे	..	७९
२८. 'हूँ'	...	८१
२९. निज़ामे-नौ	...	८३
३०. इन्सानियत का कोरस	...	८५
३१. बुलन्दबीनी	...	८७
३२. ऐतराफ़े-अज्ज	...	८८
३३. म्बाटगा	...	९३

काम है मेरा बग़ावत, नाम है मेरा शबाब;
मेरा नारा 'इंक़िलाब-ो-इंक़िलाब-ो-इंक़िलाब !

नीचनी

प्रकाशन विभाग, ओल्ड सेक्रेटेरियट, पुरानी दिल्ली के एक गोल कमरे में, जो मासिक पत्रिका 'आजकल' (उर्दू) के सम्पादक का कमरा है, दमकते चेहरे, चौड़े माथे, भारी-भरकम काया और बड़े रौबीले व्यक्तित्व के एक व्यक्ति ने पान की डिबिया से पान निकालकर मुँह में डाला, फिर बटुए से छालिया निकालते हुए सामने कुर्सियों पर विराजमान आठ-दस भद्र पुरुषों में से एक से कहा—

"कहिये, ख़ैरियत से तो हैं?"

"जी, नवाज़िश है," सम्बोधित सज्जन ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया। "आप फ़र्माइये, आपके मिज़ाज कैसे हैं?"

"मेरे मिज़ाज!" क़वाम की शीशी में से थोड़ा-सा क़वाम मुँह में डालते हुए उस रौबीले व्यक्ति ने कहा, "मेरा तो एक ही मिज़ाज है साहिब! पोते अलबत्ता बहुत से हैं।"

"ओह! मुआफ़ फ़र्माइयेगा।" सम्बोधित सज्जन ने बौखला कर अपनी एकवचन और बहुवचन की ग़लती स्वीकार करते हुए कहा।

"कैसे तशरीफ़ लाए?" रौबीले व्यक्ति ने फिर प्रश्न किया।

"जी, बहुत अर्सा से नियाज़ हासिल नहीं हुआ था, सोचा—"

लेकिन इससे पहले कि वे कुछ सोचते या सोची हुई बात कहते, उस रौबीले व्यक्ति ने उन्हें एक और पटखनी दे डाली—

"अच्छा, अच्छा, बहुत मैदान[1] से नियाज़ हासिल नहीं हुआ था।"

"ओह ! मुआफ़ फ़र्माइयेगा", सम्बोधित सज्जन ने और भी बौखला कर अपने शब्द-प्रयोग की अशुद्धि स्वीकार की और चुप हो गये।

अब उस रौबीले व्यक्ति ने, जो अपने हाव-भाव से बहुत भुलक्कड़ मालूम होता था, शायद किसी काम के याद आ जाने से हवा में एक प्रश्न उछाला : "आज क्या तारीख़ है ?"

"उन्नीस।" उत्तर देने वाले ने अपनी ओर से पूरे विश्वास के साथ उत्तर दिया।

"शायद उन्नीस से आपकी मुराद उन्नीसवीं से है।"

"जी हाँ, जी हाँ।" फिर उसी पहले सज्जन की-सी बौखलाहट का प्रदर्शन हुआ।

"हद है साहब।" रौबीले व्यक्ति ने कहना शुरू किया—"यह नई नस्ल ज़बान का सत्यानाश कर देगी। क्यों जनाब ! बीसवीं सदी को आप बीस सदी कहेंगे ?"

"जी, ग़लती हो गई।" ग़लती करने वाले ने और भी लज्जित होकर कहा और चुप हो गया। लेकिन थोड़ी देर के बाद किसी दूसरे सज्जन ने साहस से काम लेते हुए कहा, "लेकिन जोश साहब ! लोग तो उन्नीसवीं तारीख़ को

---

१. अरबी शब्द 'अर्सा' का शाब्दिक अर्थ 'मैदान' है।

उन्नीस तारीख़ ही कहते हैं।"

उस भारी-भरकम काया और रौबीले व्यक्तित्व के मालिक 'जोश' मलीहाबादी ने इस वाक्य पर व्यंग्यपूर्वक मुस्कराकर कहा, "लोग तो इस मुल्क के जाहिल हैं साहबज़ादे! मैं आम लोगों से नहीं तुम लोगों से मुख़ातिब हूँ—तुम, जो अपने आपको अदीब और शायर कहते हो। अगर तुम लोगों ने ही ज़बान की हिफ़ाज़त करने को बजाय उसे बिगाड़ना शुरू कर दिया तो....."

अब 'जोश' साहब बाक़ायदा भाषण दे रहे हैं। कुछ बातें वे ठीक कह रहे हैं और कुछ ऐसी भी कह रहे हैं जिन पर आक्षेप किया जा सकता है। ये बातें भाषा तथा साहित्य, धर्म तथा राजनीति, सामाजिक बंधनों तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानव-विकास तथा समाज में स्त्री का स्थान, सामन्तशाही, पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, समाजवाद, साम्यवाद इत्यादि विभिन्न विषयों को छू रही हैं और इन पर वे निरन्तर बोल रहे हैं। श्रोतागण मौन हैं। 'जोश' साहब का साहित्यिक स्थान, महत्ता और रौबीला व्यक्तित्व उनकी किसी ग़लत बात पर भी आक्षेप करने का साहस उत्पन्न नहीं होने देता कि एकाएक स्वयं 'जोश' साहब अपनी पहले की कही हुई किसी बात का खण्डन करने लगते हैं। एक ओर वे साम्यवाद को मानव-मुक्ति का एकमात्र साधन मानते हैं, तो दूसरी ओर यंत्र पर हल को और नागरिक जीवन पर ग्रामीण जीवन को मान्यता देते हैं। ज्ञान को स्त्री के सौन्दर्य की मृत्यु और स्त्री को पुरुष की कामतृप्ति का एक साधन सिद्ध करते हैं।

'जोश' साहब के विचारों का यह परस्पर विरोध उनकी पूरी शायरी में भी मौजूद है और इसकी गवाही देते हैं 'अर्शो-फ़र्श' (धरती-आकाश), 'शोला-ओ-शबनम' (आग और ओस), 'सुंबलो-सलासिल' (सुगंधित घास और जंजीरें) इत्यादि उनके कविता-संग्रहों के नाम। और उनकी निम्नलिखित रुबाई से तो उनकी पूरी शायरी के नैन-नक़्श सामने आ जाते हैं :

झुकता हूँ कभी रेगे-रवां[1] की जानिब,
उड़ता हूँ कभी कहकशां[2] की जानिब,
मुझ में दो दिल हैं, इक मायल-ब-ज़मीं[3] ,
और एक का रुख़ है आस्माँ की जानिब।

'जोश' की इस परस्पर-विरोधी प्रवृत्ति को समझने के लिए आवश्यक है कि उस वातावरण को जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ और उन सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों को सामने रखा जाय जिनकी उपस्थिति में शायर ने अपनी आंख खोली, क्योंकि मनुष्य का सामाजिक बोध सदैव समाज की परिवर्तनशील भौतिक-परिस्थितियों ही से रसपान करता है और वह चीज़ जिसका नाम 'घुट्टी' है मनुष्य के जीवन में बहुत बड़ा महत्व रखती है।

शबीर हसन खां 'जोश' का जन्म १८९४ ई० में मलीहाबाद (ज़िला लखनऊ) के एक जागीरदार घराने में हुआ। परदादा फ़क़ीर मोहम्मद 'गोया' अमीरुद्दौला की सेना में रसालदार

---

१. बहती हुई रेत २. आकाश-गंगा ३. धरती की ओर जिसका मुँह है।

भी थे और साहित्य-क्षेत्र के शहसवार भी। एक 'दीवान' (ग़ज़लों का संग्रह) और गद्य की एक प्रसिद्ध पुस्तक 'बस्ताने-हिकमत' यादगार छोड़ी। दादा मोहम्मद अहमद खां 'अहमद' और पिता बशीर अहमद खां 'बशीर' भी अच्छे शायर थे। यों 'जोश' ने उस सामन्ती वातावरण में पहला श्वास लिया जिसमें काव्य-प्रवृत्ति के साथ-साथ घमंड, स्वेच्छाचार, अहं-भाव तथा आत्मश्लाघा अपने शिखर पर थी। गाँव का कोई व्यक्ति यदि तने हुए धनुष की तरह शरीर को दुहरा करके सलाम न करता था तो मारे कोड़ों के उसकी खाल उधेड़ दी जाती थी (स्वयं 'जोश' भी एक शरीर पर अपनी मज़बूत छड़ी आज़मा चुके हैं)। प्रत्यक्ष है कि जन्म लेते ही 'जोश' इस वातावरण से अपना पिंड न छुड़ा सकते थे अतएव उनमें भी वही 'गुण' उत्पन्न हो गये जो उनके पुरखों की विशेषता थी। अपने बाल्यकाल के सम्बन्ध में स्वयं उनका कहना है कि :

> "मैं लड़कपन में बहुत बदमिज़ाज था। गुस्से की हालत यह थी कि मिज़ाज के ख़िलाफ़ एक ज़रा बात हुई नहीं कि मेरे रोयें-रोयें से चिनगारियाँ निकलने लगती थीं। मेरा सब से प्यारा शग़ल यह था कि एक ऊँची-सी मेज़ पर बैठकर अपने हमउम्र बच्चों को जो जी में आता अनाप-शनाप दर्स (उपदेश) दिया करता था। दर्स देते वक्त मेरी मेज़ पर एक पतली-सी छड़ी रखी रहती थी और जो बच्चा ध्यान से मेरा दर्स नहीं सुनता था, उसे मैं छड़ी से इस बुरी तरह मारता था कि बेचारा चीख़ें

मार-मार कर रोने लगता था। मादी हैसियत (आर्थिक-रूप) से वह मेरी इंतिहाई फ़ारगुल्बाली (सम्पन्नता) का ज़माना था। घर में दौलत पानी की तरह बहती थी। इस पर हाकिम होने का तनतना भी था।"

इस वातावरण में पले हुए रईसज़ादे को, जिसे नई शिक्षा से पूरी तरह लाभान्वित होने का बहुत कम अवसर मिला† और जिसके स्वभाव में शुरू ही से उद्दण्डता थी, अत्यन्त भावुक और हठी बना दिया। युवावस्था में पहुँचते-पहुँचते उनके कथनानुसार वे बड़ी सख़्ती से रोज़े, नमाज़ के पाबंद हो चुके थे। नमाज़ के समय सुगन्धित धूप जलाते और कमरा बन्द कर लेते थे। दाढ़ी रख ली थी और चारपाई पर लेटना और मांस खाना छोड़ दिया था और भावुकता इस सीमा पर पहुँच चुकी थी कि बात-बात पर उनके आँसू निकल आते थे। ऐसी अवस्था में एकाएक यह होता है कि :

"·····मेरी नमाज़ें तर्क[1] हो गईं। दाढ़ी मुँड गई, आँसू निकलना बन्द हो गये और अब मैं इस मंज़िल पर आ गया जहाँ हर पुराना एतक़ाद (विश्वास) और हर पुरानी रवायत (परम्परा) पर एतराज़ करने को जी चाहता है और एतराज़ भी अहानत-आमेज़ (अपमानजनक)।'

† 'जोश' ने घर पर उर्दू-फ़ारसी की पाठ्य-पुस्तकें पढ़ीं। फिर अंग्रेज़ी शिक्षा के लिए सीतापुर स्कूल, जुबली स्कूल लखनऊ और सेंट पीटर कालेज आगरा और अलीगढ़ में भी प्रविष्ट हुए, लेकिन पूरी तरह कहीं भी न पढ़ सके।

१. छूट गई।

इस मंज़िल पर पहुँचकर उनकी भावुकता ने उनके सामाजिक सम्बन्धों पर कुठाराघात किया। उन्होंने अपने पिता से विद्रोह किया†। पूरे परिवार से विद्रोह किया। धर्म, नैतिकता, राज्य, समाज, भगवान् अर्थात् हर उस चीज़ से विद्रोह किया जो उन्हें अपनी प्रकृति के प्रतिकूल प्रतीत हुई; और विद्रोह का यह प्रसंग इतनी कटुता धारण कर गया कि कई अवसरों पर उन्होंने केवल विद्रोह के लिए विद्रोह किया और स्वयं को सर्वोच्च समझ कर :

दूसरे आलम[1] में हूँ, दुनियां से मेरी जंग है।

ऐसा दोटूक फ़ैसला दिया और आत्मगौरव को इस सीमा तक ले गये :

हश्र[2] में भी खुसरवा[3] शान से जायेंगे हम।
और अगर पुरसिश[4] न होगी तो पलट आयेंगे हम॥

उस समय उनकी आयु २३, २४ वर्ष की थी जब उन्होंने पहले 'उमर ख़य्याम' और फिर 'हाफ़िज़' की शायरी का अध्ययन किया। फ़ारसी भाषा के ये दोनों महान कवि अपने काल के

† "मेरे पिता ने बड़ी नर्मी से मुझे समझाया, फिर धमकाया, मगर मुझ पर कोई असर न हुआ। मेरी बग़ावत बढ़ती ही चली गई। नतीजा यह हुआ कि मेरे बाप ने वसीयतनामा लिखकर मेरे पास भेज दिया कि अगर अब भी मैं अपनी ज़िद पर क़ायम रहूंगा तो सिर्फ १०० रुपये माहवार वजीफ़े के अलावा कुल जायदाद से महरूम कर दिया जाऊँगा। लेकिन मुझ पर इसका कोई असर न हुआ।"

१. संसार २. प्रलय के समय भगवान के सामने ३. बादशाही ४. आव-भगत

विद्रोही कवि थे। थोड़े से भेद के साथ दोनों अपने समकालीन नैतिक तथा धार्मिक सिद्धान्तों को ढकोसला समझते थे और मनुष्य को इन ढकोसलों से स्वतंत्र होकर समस्त सांसारिक आनन्दों से आनन्दित होने का उपदेश देते थे (मदिरापान को उन्होंने विशेष महत्व दिया) । उनके विचार में जीवन के जो क्षण मनुष्य को प्राप्त हैं, वही उसके अपने हैं और उसे चाहिए कि उन क्षणों को अधिक से अधिक प्रसन्न रह कर व्यतीत करे। 'जोश' को ये सिद्धांत अपनी विद्रोही प्रकृति के ठीक अनुकूल जँचे और उन्होंने इन सिद्धान्तों को ज्यों का त्यों उठाकर अपना लिया। उमर ख़य्याम और हाफ़िज़ के सिद्धान्तों ही को नहीं, जहां से और जब भी उन्हें अपनी प्रकृति के अनुकूल सिद्धान्त मिले वे उनके व्यक्तित्व और फिर उनकी शायरी का अंग बन गये। अध्ययन का अवसर मिला तो वे मिल्टन, शैले, बायरन और वर्डज़वर्थ से भी प्रभावित हुए और आगे चलकर गेटे, दांते, शोपिनहार, रूसो और नतशे से भी, विशेष कर नतशे से वे बुरी तरह प्रभावित हुए। नतशे गेटे के बाद वाली पीढ़ी का दार्शनिक साहित्यकार था, जिसने जर्मनी में एक ज़बरदस्त केन्द्रीय राज्य और केन्द्रीय-शक्ति का समर्थन किया और श्रेष्ठ महामानव (Super Man) का ऐसा आदर्श चित्र खींचा, जो शारीरिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक अर्थात् समस्त प्रकार की महान् शक्तियों का संग्रह तथा प्रतिरूप हो; जो ऊपर के वर्ग का प्रतिनिधि हो और जन-साधारण के अधिकारों की उपेक्षा करके शक्ति को अपनी

मंज़िल बना सके*। उसने हर प्रकार के नैतिक सिद्धान्त, अहिंसा और समानता को अस्वीकार किया। ईश्वर की सत्ता से इन्कार किया। संसार में सब से बड़ा महत्व 'मैं' (अहंभाव) को दिया और स्त्री को पुरुष की सेवा और मनोविनोद का एक साधन सिद्ध किया। प्रत्यक्ष है कि 'जोश' की विद्रोही प्रकृति को इस प्रकार के सिद्धान्तों से कितना सीधा सम्बन्ध हो सकता था। उन्होंने नतशे के हर विचार को अपनी नीति और नारा बना लिया और अपनी हर रचना पर 'बिस्मिल्लाह' ('खुदा के नाम से शुरू करता हूँ') के स्थान पर 'ब नामे-कुव्वतो-हयात' ('शक्ति तथा जीवन के नाम') लिखना शुरू कर दिया।

उमर ख़य्याम, हाफ़िज़ और नतशे से प्रभावित होने के अतिरिक्त देश की राजनैतिक परिस्थितियों ने भी उन पर सीधा प्रभाव डाला और उनकी विद्रोही प्रवृत्ति को बड़ी शक्ति मिली। अतएव जब उन्होंने :

अलअमान-ो-अलहज़र[1] मेरी कड़क मेरा जलाल[2]।
ख़ून सफ़्फ़ाकी,[3] गरज, तूफ़ान, बरबादी, क़ताल[4]॥
बरछियां, भाले, कमानें, तीर, तलवारें, कटार।
बरक़ी[5] परचम[6] अलम,[7] घोड़े, पयादे, शहसवार॥

---

*"शक्ति प्राप्त करो और प्रत्येक नैतिक सिद्धान्त को ठुकरा दो, चाहे इसके लिए तुम्हें कितने ही बलहीन व्यक्तियों को कुचलना पड़े···" (नतशे)

१. खुदा की पनाह २. तेज ३. हिंसात्मक ४. युद्ध ५. बिजली की-सी शक्ति (तेज़ी) रखने वाले ६.-७. पताका

आंधियों से मेरी उड़ जाता है दुनिया का निज़ाम[1] ।
रहम का अहसास है मेरी शरीयत[2] में हराम ॥
मौत है खूराक मेरी, मौत पर जीती हूँ मैं ।
सेर होकर[3] गोश्त खाती हूँ, लहू पीती हूँ मैं ॥
('बग़ावत')

ऐसी भयानक नज़में लिखना शुरू कीं तो देश की जनता ने जो अंग्रेज़ी राज्य में बुरी तरह पिस रही थी, देश की स्वतन्त्रता के लिए मिट रही थी, मिट-मिट कर उभर रही थी और परतंत्रता तथा अंग्रेज़ के प्रति घृणा के हर बोल को छाती से लगा रही थी, 'जोश' के नारों को उठा लिया। वह बड़ा हंगामों-भरा ज़माना था। इधर भारत अंग्रेज़ी साम्राज्य की जंजीरों में जकड़ा हुआ स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्नशील था और उधर रूस की क्रान्ति के बाद एक नया जीवन-दर्शन पूरे संसार को अपनी ओर आकृष्ट कर रहा था। अंग्रेज़ों ने इस नये जीवन-दर्शन का वास्तविक रूप-रंग भारत तक नहीं पहुँचने दिया और न उस समय भारत में श्रमजीवियों की कोई ऐसी संगठित संस्था थी जो वर्गवाद के प्रकाश में उस स्वतन्त्रता-आन्दोलन और उस नये जीवन-दर्शन का विश्लेषण करके क्रान्तिकारी नेतृत्व कर सकती। अतएव इंक़िलाब (क्रांति) को जिसके अर्थ सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन के हैं, स्वतन्त्रता के अर्थों में लिया गया और 'शायरे-बग़ावत' जोश को 'शायरे-इंक़िलाब' की उपाधि दे दी गई।

---

१. व्यवस्था २. धर्म ३. पेट भरकर

'जोश' के सही साहित्यिक स्थान को समझने में सरदार जाफ़री (उर्दू के प्रसिद्ध शायर और आलोचक) के कथनानुसार सबसे बड़ी भूल 'शायरे-इंक़िलाब' की उपाधि से होती है। इंक़िलाब का शब्द आज के आलोचकों की दृष्टि को ग़लत मार्ग पर डाल देता है और वे 'जोश' से ऐसी आशाएं बांधने लगते हैं जो उनकी शायरी पूरा नहीं कर सकती। 'जोश' की सीधी-सादी 'ऐजीटेशनल' नज़्मों को जिन्होंने निःसन्देह अपने काल में बहुत बड़ी कार्यपूर्ति की है, भूल से क्रान्तिकारी नज़्मों का नाम दिया गया*। यह भूल केवल राष्ट्रीय और विद्रोही

*खैर[1] ऐ सौदागरो ! अब है तो बस इस बात में।
वक्त के फ़रमान[2] के आगे झुका दो गरदनें॥

इक कहानी वक्त लिखेगा नये मज़मून[3] की।
जिसकी सुर्खी[4] को ज़रूरत है तुम्हारे खून की॥

वक्त का फ़रमान अपना रुख बदल सकता नहीं।
मौत टल सकती है अब फ़रमान टल सकता नहीं॥

'ईस्ट इण्डिया कम्पनी के फ़रज़न्दों (बेटों) के नाम' (जिसका एक टुकड़ा ऊपर दिया गया है), 'बफ़ादाराने-अज़ली का पयाम शहनशाहे हिन्दोस्तान के नाम', 'शिकस्ते-ज़िन्दाँ का ख्वाब' ऐसी नज्मों की हज़ारों प्रतियाँ छपकर चोरी-छिपे बाँटी गईं, लाखों ज़बानों पर आईं और बहुत-से लोग स्टेज पर ये नज्में पढ़ने के कारण गिरफ्तार हुए। यहाँ यह चर्चा असंगत न होगी कि इस प्रकार की नज्मों से (जिन्हें कला की महान् कसौटी पर परखते समय भावी आलोचक शायद रद्द कर देगा) 'जोश' ने उर्दू शायरी में एक नई प्रकार की लड़ाकू (Militant) शायरी की नींव डाली है। 'जोश' से पहले स्वर की यह घनगरज, पहाड़ी झरनों की-सी तीव्र गति, उर्दू के किसी शायर को प्राप्त नहीं हुई। अभी तक उर्दू शायरी ने 'जोश' जैसा शब्दों का जादूगर पैदा नहीं किया।

१. रक्षा २. हुक्म ३. विषय ४. शीर्षक

नज़्मों तक ही सीमित नहीं रही; 'जोश' की बहुत-सी क्रांति-वादी नज़्मों को समझने में भी भूल की गई है। क्रांन्तिकारी शायरी में और क्रांतिवादी शायरी में थोड़े से हेर-फेर के साथ वही अन्तर है जो यथार्थवाद और रोमाँसवाद में है। 'जोश' क्रान्ति-कारी नहीं, रोमाँसवादी शायर हैं और उनकी क्रान्ति की उद्-भावना भी शत-प्रतिशत रोमाँसवादी है। यह उद्भावना चूंकि देश-प्रेम तथा देश-स्वतंत्रता की उत्कट भावना से उत्पन्न हुई, इसलिए ज़रा भी चोट लगने पर भड़क कर वे आवेग में आ जाते हैं। निर्माण पर विनाश को प्रधानता देते हैं। क्रान्ति को सुन्दर कम और भयंकर अधिक दर्शाते हैं। और यही कारण है कि उनकी इस प्रकार की शायरी में उबाल और गर्मी तो है, गंभीरता और प्रकाश नहीं। पूँजीपति, मज़दूर और किसान का नाम लेकर वे अपनी छाती कूटते हैं। अपनी घन-गरज से रास्ते के दर्शकों को एकत्र कर लेते हैं और एक ऊँचे स्थान पर खड़े होकर नारा लगाते हैं और इस प्रकार बेचैन होकर गाली देने की उनकी भावना शेर का रूप धारण कर लेती है। लेकिन इसका अभिप्राय यह नहीं है कि आज यदि क्रान्ति की व्याख्या बहुत स्पष्ट हो चुकी है और हम अधिक विश्वास के साथ खरे और खोटे की पहचान कर सकते हैं तो लगभग आधी शताब्दी तक पूरी की पूरी पीढ़ी को प्रभावित करने वाले इस शायर की शायरी अपने स्थान से डिग गई है। क्योंकि यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि किसी काल की अराजकता तथा अव्यवस्था के विरुद्ध घृणा का नकारात्मक भाव ही, जिसमें अनिवार्य रूप से संकीर्णता शामिल हो जाती है,

आगे चलकर स्वीकारात्मक रूप धारण करता है; और वह घृणा आप-ही-आप वैज्ञानिक सिद्धान्तों में ढल जाती है। लेनिन ने टालस्टाय के सम्बन्ध में कहा था कि टालस्टाय रोमांसवादी है लेकिन उसने रूसी किसान के दुखों को बहुत निकट से देखा और समझा है अतएव उसके साहित्य से रूस की क्रान्ति को पूरी एक शताब्दी की मंज़िल तै करने में सहायता मिली है। ठीक यही बात 'जोश' की शायरी के बारे में कही जा सकती है। वास्तविक रूप से क्रान्तिकारी शायरी न होने पर भी 'जोश' की शायरी ने क्रान्ति के लिए न केवल मार्ग बनाया है बल्कि हज़ारों-लाखों नौजवानों को क्रान्ति-संग्राम के लिए तैयार किया है। अपनी शायरी द्वारा उन्होंने भारतीय राष्ट्र को अंग्रेज़ी राज्य तथा साम्राज्य के विरुद्ध उभारा, प्रतिक्रियावादी संस्थाओं का भंडाफोड़ किया। मूढ़ता, धर्मोन्माद, अन्धविश्वास और परम्परागत नैतिकता की ज़ंजीरें काटीं। अतएव उनकी इस पद्धति की नज़में आज भी हमारा लहू गरमा देती हैं और उनके अध्ययन से अपने देश, अपनी जाति, अपनी सभ्यता, संस्कृति और अपनी कला तथा साहित्य से हमारा प्रेम दुगना हो जाता है।

'जोश' साहब बड़े नफ़ासतपसन्द, साहसी, निडर और भावुक हैं। अभी बड़े कर्कश और व्यंग्य-भरे शब्दों में वे आपकी भाषा, परिभाषा, उच्चारण तथा वर्णन की त्रुटियां गिनवा रहे हैं और अभी आपकी किसी रचना की प्रशंसा करते हुए आपकी पीठ ठोंक रहे हैं। किसी ऐसे मुशायरे में जिस में मुल्ला लोगों की संख्या अधिक होगी, वे जान-बूझ कर

ऐसी नज़्में या रुबाइयां सुनायेंगे जिनमें मुल्लाओं और आस्तिकों को फटकारा गया हो। सरकारी लोगों की महफ़िल होगी तो उन्हें अपनी नज़्म 'मातमे-आज़ादी' (जो इस संकलन में मौजूद है) याद आजायेगी और स्त्रियों की संख्या अधिक होगी तो झूम-झूमकर 'हाये जवानी हाय ज़माने' अलापना शुरू कर देंगे। मुल्ला लोग नाक-भौं सिकोड़ते हैं। सरकारी दफ़्तरों में चेमिगोइयां होती हैं और स्त्रियाँ 'वाक आउट' तक कर जाती हैं लेकिन 'जोश' टस से मस नहीं होते। शायद उन्हें अनुभव है (और बिल्कुल उचित अनुभव है) कि अब वे ख्याति की उस सीढ़ी पर पहुँच चुके हैं जहां किसी की 'असभ्यता' पर क्रोध की बजाय प्यार ही आ सकता है।

ये हैं 'जोश' साहब !

और यही हैं 'जोश' साहब जिन्होंने चांदी के चन्द सिक्कों के लिए, या न जाने किसलिए अपनी जीवन-भर की मान्यताओं, जीवन-भर की कमाई हुई ख्याति, आदर और सम्मान† पर स्वयं अपने हाथों पानी फेर दिया और पिछले दिनों स्थायी रूप से पाकिस्तान चले गये। सुना है वहां वे इस्लाम के गीत गायेंगे लेकिन यह भी सुना है कि

'आख़री उम्र में क्या ख़ाक मुसलमाँ होंगे !'

---

† उनकी साहित्य-सेवाओं के उपलक्ष में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म विभूषण' (दूसरी श्रेणी) की उपाधि भी प्रदान की थी।

चयन

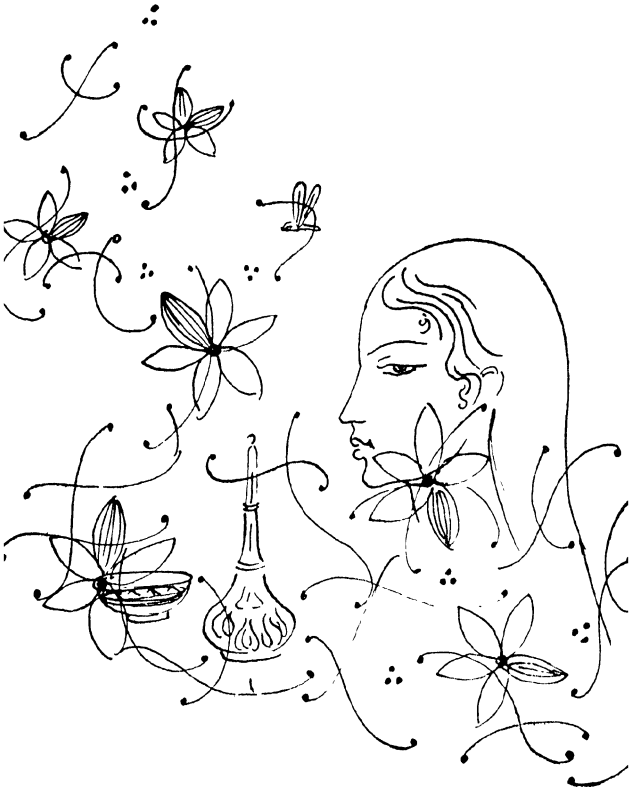

इस संकलन में 'जोश' के अपेक्षाकृत सुगम
'कलाम' ही का चयन किया गया है।

अल्हड़ कामनी

नाज़ से चौंकी है यूँ इक मस्त अल्हड़ कामनी
जैसे इठलाती किरन से रसमसाती है नदी,
चाँद-से माथे पै जुंबिश में[1] महकती काकुलें[2]
काकुलों के ज़ेरे-साया[3] झुटपुटे की मोहनी,
झिलमिलाती शमअ़ की ज़ौ[4] में ये रुख़्सारों का[5] रंग
छाँव में तारों की जैसे तख़्तियां अ़लमास की,[6]
करवटों में कमसिनी के वलवलों की चुटकियां
अँखड़ियों में भैरवी अंगड़ाइयां लेती हुई,
करवटों से खुल रहा है जिस्म का यूँ बन्द-बन्द
खिल रही है नाज़ से गोया चंबेली की कली,
सुबह के मसले हुए बिस्तर पे क़ामत[7] की फबन
'शाम' के तरशे हुए होंटों पे जैसे बांसुरी,
जूं सनमख़ाने में[8] पिछली रात फूलों की महक
सर से चादर के सरकते ही वो लपटें जिस्म की,

---

१. लहराती हुई २. लटें ३. छाया में ४. प्रकाश ५. कपोलों का ६. हीरों की ७. काया ८. बुतख़ाने में

काँपती लौ-से लबो-रुख्सार पर[1] वो धूप-छाँव
फूल-बन में जैसे उड़ते जुगनुओं की रोशनी,
खुफ़्ता[2] बासी हार पर बिखरी हुई जुल्फे-दोता[3]
और बिखरी जुल्फ़ में उलझी हुई चम्पाकली,
सुर्ख़ जोशन,[4] लच्छियां काली, कलाई लालारंग[5]
रुख़[6] गुलाबी, शबनमी धानी, दुलाई सरदई,
बिन धुले मुखड़े पे ऐसी मुस्कराहट, जिस तरह
पंखड़ी की ओस पर पिछले पहर की चांदनी,
जुंबिशे-मिज़गां[7] में गद्र[8] वलवलों की चशमकें[9]
'जोश' के नग़मात में[10] जिस तरह मौजे-ज़िंदगी[11]।

---

१. होंटों और कपोलों पर २. सोये हुए ३. दोहरी लट (घने बाल) ४. तनुत्र ५. गुलाबी ६. मुखड़ा ७. पलकों की गति ८. परिपक्व ९. इशारे १०. नग़मों में ११. जीवन-लहर

दोपट्टे को मसले, बदन को चुराये

कलेजे में वो घाव हैं ग़म की लै से,
अभी तक नहीं जो भरे मौजे-मै[1] से,
उठाए हैं दिल ने सितम कैसे-कैसे,
मेरे वक्ते-रुख़्सत[2] वो आई थीं जैसे,
खुदाया उदू[3] भी न इस तरह आए,
दोपट्टे को मसले, बदन को चुराए।

जिन आँखों के पर्दों में तूफां था बरपा,
जिन आँखों में तुग़ियाने-ख़ौफ़ो-हया[4] था,
जिन आँखों में सैलाबे-आहो-बुक़ा[5] था,
जिन आँखों में दिल करवटें ले रहा था,
उन आँखों पे मिज़गां की[6] चिलमन गिराए,
दोपट्टे को मसले, बदन को चुराए।

निगाहों में ये बद्दुआएँ बराबर,
कि कट जायें वक्ते-परअफ़शां के शहपर[7],

---

१. शराब की लहर (शराब) २. बिदा समय ३. शत्रु ४. भय तथा लज्जा का तूफ़ान ५. आर्त्तनाद की बाढ़ ६. पलकों की ७. उड़ने वाले समय के पंख

धुआँ रेल का, और जुलफ़े-मुअंबर[1] ,
कभी मुझ पर, और गाह[2] नज़रें घड़ी पर,
कलेजे से कुरबत[3] के लम्हे[4] लगाए,
दोपट्टे को मसले, बदन को चुराए।

तहम्मुल[5] से आँखें झुकाने की कोशिश,
मुझे दर्दे-दिल से बचाने की कोशिश,
अज़ीज़ों से भी ग़म छुपाने की कोशिश,
फुग़ां[6] को तबस्सुम[7] बनाने की कोशिश,
हिना[8] से कोई ज़ख़्म जैसे छुपाए,
दोपट्टे को मसले, बदन को चुराए।

नज़र मुन्तशर[9], जिस्म तर, रंग मद्धम,
ज़बां खुश्क, रुख़्सार नम[10], जुल्फ़ बरहम[11]
तग़य्युर सरापा[12] तहय्युर मुजस्सम[13],
सरासीमगी[14] में वो चेहरे का आलम[15]
कि सोतों को जिस तरह तूफ़ां जगाए,
दोपट्टे को मसले, बदन को चुराए।

तबो-ताब[16] चेहरे पै लाने की कोशिश,
अलम[17] को मुसर्रत जताने की कोशिश,

---

१. सुगन्धित केश २. कभी ३. सामीप्य ४. क्षण ५. सहनशीलता ६. आर्त्तनाद ७. मुस्कान ८. महंदी ९. अस्तव्यस्त (भटकती हुई) १०. कपोल गीले ११. अस्तव्यस्त केश १२. विकार की मूर्ति १३. आश्चर्य की मूर्ति १४. विक्षुब्धता १५. हालत १६. चमक १७. दुःख

उदासी को फ़रहत[1] दिखाने की कोशिश,
तबस्सुम[2] से आहें दबाने की कोशिश,
कोई जैसे आँधी में दीपक जलाए,
दोपट्टे को मसले, बदन को चुराए।

जब इतना ही दुनिया से डरना था तुमको,
यमे–इश्क़[3] से पार उतरना था तुम को,
जो गरदाबे दिल[4] से उभरना था तुम को,
जो मुझ से किनारा ही करना था तुम को,
मुझे मौजे–दरिया[5] से क्यों खेंच लाए,
दोपट्टे को मसले, बदन को चुराए।

---

१. प्रसन्नता २. मुस्कान ३. इश्क़ रूपी नदी ४. हृदय-रूपी भँवर ५. दरिया की लहरें।

तआकुब *

"मर्द हो इश्क़ से जिहाद[1] करो"
"अब मुझे भूलकर न याद करो"
"दिल से बीते दिनों की याद मिटाओ"
"न तो अब खुद रो न मुझको रुलाओ"
"भूल जाओ कही सुनी बातें"
"न तो वो दिन हैं अब न वो रातें"
"अब न वो मोड़ हैं, न वो गलियां"
"अब न वो फूल हैं न वोह कलियां"
"इस जहाँ से गुज़र चुकी हूँ मैं"
"अब ये समझो कि मर चुकी हूँ मैं"
"एक दुखिया को और अब न सताओ"
"बन पड़े तो मेरी गली में न आओ"
"मर्द हो इश्क़ से जिहाद करो"
"अब मुझे भूल कर न याद करो"

मेरे कानों में, मेरे सीने में
गूंजती रहती हैं ये आवाज़ें,
जिस तरफ़ जाऊं दिल हिलाती हैं
ये मेरे साथ साथ जाती हैं

---

* पीछा
१. धर्मयुद्ध

यादे-जांबख़्श[1] से बगूलों से
ये सदाएँ[2] बराबर आती हैं
दिल का दरवाज़ा खटखटाती हैं
"भूल जाओ कही सुनी बातें
न तो वो दिन हैं अब न वो रातें
मर्द हो इश्क़ से जिहाद करो
अब मुझे भूल कर न याद करो"
तंग आकर जिधर भी जाता हूँ
इन सदाओं को साथ पाता हूँ
सहने-गेती से[3] ओजे - गर्दू से[4]
ताबे-अंजुम से,[5] आबे-जेहूँ से[6]
बहरे-मव्वाज के[7] हबाबों से[8]
हिकमतो-शेर[9] की किताबों से
शोरिशों, ग़लग़लों, धमाकों से
तेज़-रौ[10] गाड़ियों के पहियों से
शेरगोई[11] से शेरख्वानी से[12]
हर हक़ीक़त[13] से हर कहानी से

---

१. जीवन प्रदान करने वाली याद २. आवाज़ें ३. संसार के आँगन से ४. आकाश के शिखर से ५. सितारों की चमक से ६. दरिया (मध्य एशिया का एक दरिया) के पानी से ७. लहरें लेते हुए सागर के ८. बुलबुलों से ९. दर्शन तथा काव्य १०. तेज़ चलने वाली ११.–१२. शेर कहने (लिखने) शेर पढ़ने (सुनाने) से १३. वास्तविकता

चौड़ी सड़कों से तंग गलियों से
हिलती शाखों से खिलती कलियों से
शोरे-जलवत,[१] सकूते-खलवत से[२]
जुंबिशे-ज़ौ,[३] जमूदे-ज़ुलमत से[४]
माबदों से,[५] शराब ख़ानों से
मुतरिबे-खुशनवा की[६] तानों से
बाग़ से, मदरिसे से, जंगल से
तपते सूरज, बरसते बादल से
ये सदाएँ बराबर आती हैं
दिल का दरवाज़ा खटखटाती हैं
"भूल जाओ कही सुनी बातें"
"न तो वो दिन हैं अब न वो रातें"
"एक दुखिया को और अब न सताओ"
"बन पड़े तो मेरी गली में न आओ"
"अब जहाँ से गुज़र चुकी हूँ मैं"
"तुम यह समझो कि मर चुकी हूँ मैं"
"मर्द हो इश्क़ से जिहाद करो"
"अब मुझे भूल कर न याद करो"

---

१. जनसमूह के शोर से २. एकान्त की चुप्पी से ३. प्रकाश की गति ४. अन्धकार की जड़ता से ५. उपासना-गृहों से ६. मीठे गले वाले गायक की

वादा फ़रामोशी

समझता था मैं तेरे अहदे-वफ़ा में[१],
पहाड़ों के मानिंद है उस्तवारी[२]।
मुझे तुझको पाकर यक़ीं हो चला था,
कि अब ख़त्म है दौरे फ़र्यादो-ज़ारी[३]।
मैं ये राहे-ग़म में समझने लगा था,
कि अब बख़्त[४] की मोड़ पर है सवारी।
मिटेगी, मुझे ये गुमां[५] हो चला था,
मेरी तीराबख़्ती[६], मेरी सोगवारी[७]।
ग़रज़ ये उम्मीदें, ग़रज़ ये उमंगें,
कि मबनी[८] थी जिन पर मेरी कामगारी।
चली उन पे सद हैफ़[९], तलवार बनकर,
तेरी कमसिनी[११] की फ़रामोशकारी[१२]।
मुदावा[१३] कर ऐ चारासाज़े-मरीज़ां[१४],
तमाशा कर[१५] ऐ महवे-आईनादारी[१६]।
"तुझे किस तमन्ना से हम देखते हैं"॥

(ग़ालिब)

---

१. प्रेम निभाने के वचन में २. दृढ़ता ३. आर्त्तनाद का काल ४. भाग्य ५. आशा (भ्रम) ६. दुर्भाग्य ७. क्रंदन ८. आधारित ९. सफलता १०. हज़ार अफ़सोस ११. अल्पवयस्कता १२. भूल जाना १३. इलाज १४. रोगियों के चिकित्सक १५. दर्शन दे १६. दर्पण देखने में मग्न

बिलकती यादें

सर्द मीना[1] का तसव्वुर[2] सुर्ख पैमाने की याद।
ऊद[3] की खुशबू में फिर आई है मैख़ाने की याद॥

गोशा-ए-दिल[4] में पछाड़ें खा रही है देर से।
मस्त झोंकों में जुनूं[5] के रक़्स फ़र्माने[6] की याद॥

आई है रह-रहके गिरती बिजलियों के रूप में।
एक शब[7] पर्दा उठाकर उनके दर[8] आने की याद॥

ले रहा है हिचकियां एक एक फ़रज़ाने[9] का नाम।
भर रही है सिसकियां एक एक दीवाने की याद॥

दिल में आहें भर रही है, बाल बिखराए हुए।
लड़खड़ाने, गुनगुनाने, नाचने, गाने की याद॥

मक़बरों से आ रही है झुटपुटे की छांव में।
एक एक करके रफ़ीक़ों के[10] बिछड़ जाने की याद॥

'जोश' अबरे-तीरह में[11] गुम है, मेरा माहे-मुनीर[12]।
कुश्ता[13] शम्मों के धुएँ में जैसे परवाने की याद॥

---

१. मद्य रखने का पात्र २. कल्पना ३. एक सुगंधित लकड़ी ४. हृदय के कोने (हृदय) ५. उन्माद ६. नृत्य करने ७. रात ८. भीतर ९. बुद्धिमान १० साथियों के ११. काले बादलों में १२. प्रकाशमान चांद १३. बुझी हुई

लाइलाज तास्वीर[1]

तुरबत[2] की तीरगी[3] में उजाला हुआ तो क्या ?
जीने का बादे-मार्ग[4] सहारा हुआ तो क्या ?

मुद्दत से अब तो गेसु-ए-दानिश[5] है और दोश[6] ,
अब अबरे-जुल्फ़े-यार हवेदा[7] हुआ तो क्या ?

मजनूँ के वलवलों ही पे जब ओस पड़ चुकी,
सहरा में रक़्से-नाक़-ए लैला[8] हुआ तो क्या ?

तबदील हो चुका था जो दरिया सुराब[9] में,
अब जाके फिर सुराब से दरिया हुआ तो क्या ?

खुद दर्द बन चुका है मुदावा-ए-ज़िंदगी,[10]
अब दर्दे-ज़िंदगी का मुदावा हुआ तो क्या ?

आँखों को 'जोश' बंद हुए देर हो गई,
अब बेनक़ाब आरिजे-सलमां[11] हुआ तो क्या ?

---

१. अनुपचार्य (अनिवार्य) देर २. कब्र ३. अंधकार ४. मृत्यु के बाद ५. बुद्धि रूपी केश ६. कंधा (अर्थात् अब उन्माद नहीं रहा) ७. प्रेयसी के कोशों का बादल खुला ८. लैला की ऊंटनी का नृत्य ९. मरीचिका १०. जीवन का इलाज ११. सलमां (प्रेयसी) के कपोल

सूनी जन्नत

हां यही है वो मकां, जन्नते-दौरे-कुहन[1] ।
कल था जिसकी अंजुमन में हुस्ने-सदरे-अंजुमन[2] ।।
हां ये पुल है रेल का, और ये चमकती पटरियां ।
दास्तां दर दास्तानो-दास्तां दर दास्तां[3] ।।
हां ये खिड़की है वही, और ये सलाखें हैं वही ।
झांकती थी जिनसे उस मुखड़े की मीठी चांदनी ।।
हां यहीं, जब पड़ रही थी एक दिन हल्की फुआर ।
गिर रहा था सुर्ख जुल्फ़ों का सुनहरा आबशार ।।
चुभ रही है दिल में मिसले-नेशतर[4] कम्बख्त सांस ।
ये मकां है, या कोई चुभती हुई सीने की फांस ।।
आज इबरतनाक[5] है, बेरूह है, बेहोश है ।
कल हयातो-नग़मा[6] था, अब सर्द है, ख़ामोश है ।।

(२)

घर को अन्दर से भी देखूं या सड़क पर ही रहूं ?
ख़ैर अन्दर भी चलूं, फ़रमाने-दिल[7] है क्या करूँ ।

---

१. बीते हुए काल का स्वर्ग-स्थान २. सभापति (घर की मालकिन) का सौंदर्य ३. अनेकों कहानियाँ ४. नशतर की तरह ५. शोच्य ६. जीवन तथा संगीत ७. दिल का आदेश

उफ़ ये सुर्ख़ी का निशां पहचानता हूँ मैं इसे।
जानता है ये मुझे और जानता हूँ मैं इसे॥
हां यहीं आराम करती थी वो थक जाने के बाद।
हां, यहां वो बैठती थी गुस्ल फ़रमाने[1] के बाद॥
हां यहां बदले थे बेचैनी से ज़ानू एक दिन।
हां, यहां टपके थे उन आंखों से आँसू एक दिन॥
मुस्कराकर इक अदा-ए-नौ से[2] देखा था यहां।
काटकर दांतों से इक दिन पान बख़्शा था यहां॥
यां छिड़ा था क़िस्सा-ए-सोज़े-निहानी[3] एक दिन।
इधर बैठे थे वो जब बरसा था पानी एक दिन॥
आज भी महफ़ूज़[4] हैं सूने दरो-दीवार में।
वो तराने कल जो ग़लतां थे[5] लबे-गुलबार में[6]॥
ज़र्रे-ज़र्रे में खटक महसूस होती है यहां।
दिल धड़कने की धमक महसूस होती है यहां॥
खून में डूबा हुआ इन्सान का अफ़साना है।
कल जो घर इशरतसरा[7] था,आज मातमखाना[8] है॥

---

१. स्नान करने २. नई अदा से ३. भीतरी ज्वाला (प्रेम) की कहानी ४. सुरक्षित ५. उभरते थे ६. उन होंठों में जिन से फूल झड़ते थे ७. रतिगृह ८. शोकगृह

बरसी हुई आँखें

मैं समझता था कि अब रो न सकूगा ऐ 'जोश' !
दौलते-सब्र[1] कभी खो न सकूँगा ऐ 'जोश' !

इश्क़ की छांव भी देखूंगा तो कतराऊंगा ।
काबा-ए-अक़्ल[2] से बाहर न कभी जाऊंगा ।।

आबरू इश्क़ के बाज़ार में खोते हैं कहीं ?
जिन्से-हिकमत[3] के खरीदार भी रोते हैं कहीं ?

अब न तड़पूंगा कभी इश्क़ के अफ़सानों पर ।
अब जो रोऊंगा तो रौंदे हुए इन्सानों पर ।।

अब तमन्ना पे न अरमान पे दिल धड़केगा ।
अब जो धड़केगा तो इन्सान पे दिल धड़केगा ।।

चुभ सकेगा न मेरे दिल में इशारा कोई ।
नौके-मिज़गां पे न दमकेगा सितारा कोई ।।

अब न याद आयेगा रंगे-लबो-रुख़सार[4] कभी ।
दिल में गूंजेगी न पाज़ेब की झंकार कभी ।

अब कभी मुझसे न रूठा हुआ दिल बोलेगा ।
अब तसव्वुर[5] किसी घूंगट के न पट खोलेगा ।।

अब पयाम आयेगा फूलों का न गुलशन से कोई ।
अब न झांकेगा महो-साल के[6] रोज़न[7] से कोई ।।

---

१. धैर्य रूपी धन २. बुद्धि रूपी तीर्थ ३. दर्शनिक विचार-रूपी वस्तु ४. ओठों और कपोलों का रंग ५. कल्पना ६. महीनों, सालों के ७. छिद्र

याद आयेंगी न भूली हुई बातें मुझको।
अब पुकारेंगी न डूबी हुई रातें मुझको॥
लेकिन अफ़सोस कि ये संगे-यक़ीं[1] टूट गया।
दामने-सब्र[2] मेरे हाथ से फिर छूट गया॥
जल उठी रूह में फिर शमअ़ सनमख़ाने की।
ख़ाके-परवाना में आग आगई परवाने की॥
जिस से रातें कभी रोशन थीं वो जुगनू जागा।
चश्मे-ख़ूंबस्ता[3] में सोया हुआ आँसू जागा॥
अक़्ल की धूप ढली, इश्क़ के तारे निकले।
बर्फ़ महताब[4] से पिघली तो शरारे[5] निकले॥
कान में दौरे-मुहब्बत[6] के फ़साने चहके।
सर पे बिछड़े हुए लम्हों के[7] तराने चहके॥
जिन से खिलती थीं ख़दो-ख़ाल[8] की कलियां दिल की।
नौजवानी की उभर आईं वो गलियां दिल की॥
दिल की चोटों को हवाओं ने दबाकर देखा।
फिर जवानी ने मुझे आँख उठाकर देखा॥
इश्क़ के तौर[9] मुहब्बत के वतीरे[10] उभरे।
दिल में डूबी हुई यादों के जज़ीरे[11] उभरे॥

१. विश्वास-रूपी पत्थर २. धैर्य का आंचल ३. ऐसी आंख जिसमें रक्त जमा हो ४. चाँद ५. चिंगारियां ६. प्रेम-काल ७. क्षणों के ८. नयन-नक्श ९, १०. ढंग ११. टापू

ताज़ा होटों का जगाती हुई जादू आई।
कमसिनों[1] के नफ़्से-ख़ाम[2] की खुशबू आई॥
क्या कहूँ, चर्ख[3] से क्या बारिशे-तनवीर[4] हुई।
किन लिहाफ़ों की महक आके बग़लगीर हुई॥
जिनकी लहरों ने दिखाया था किनारा मुझ को।
फिर उन्हीं चांदनी रातों ने पुकारा मुझ को॥
नाला[5] फिर रात को साबितो-सय्यार गया।
हम तो समझे थे कि ऐ 'जोश' ये आज़ार[6] गया॥

---

१. अल्पायु प्रेयसियों २. कच्चे श्वास ३. आकाश ४. प्रकाश की वर्षा ५. आर्त्तनाद ६. मुसीबत

वफ़ादाराने-अज़ली का पयाम

*शहनशाहे-हिंदोस्तां के नाम**

ताजपोशी का मुबारिक दिन है ऐ आलम-पनाह।
ऐ ग़रीबों के अमीर, ऐ मुफ़लिसों के बादशाह॥
ऐ गदापेशों के[1] सुलतां, जाहिलों के ताजदार।
बेज़रों के[2] शाह, दरयूज़हगरों के[3] शहरयार[4]॥
रास कल आई थी जैसे आपके माँ बाप को।
यूँही रस्मे-ताजपोशी हो मुबारिक आपको॥
दिल के दरिया नुत्क़[5] की वादी में बह सकते नहीं।
आप की हैबत[6] से हम कुछ खुल के कह सकते नहीं॥
लेकिन इतना डरते-डरते अर्ज़ करते हैं ज़रूर।
हिंद से वाक़िफ़ किये जाते[7] नहीं शायद हुज़ूर॥
आपके हिंदोस्तां के जिस्म पर बोटी नहीं।
तन पे इक धज्जी नहीं है, पेट को रोटी नहीं॥
हर जबीं पर[8] है शिकन[9] इस कजकुलाही[10] की क़सम।
हर मकां इक मक़बरा है, क़सरे-शाही[11] की क़सम॥

---

* यह कविता जार्ज षष्टम की ताजपोशी के अवसर पर लिखी गई थी।

१. भिखमंगों के २. निर्धनों के ३. भिखारियों के ४. बादशाह ५. वाक्शक्ति ६. त्रास ७. पहचाने जाते ८. माथे पर ९. बल १०. टेढ़ी टोपी (बादशाही) ११. राजभवन

नौजवां बिफरे हुए हैं भूख से दिल तंग है।
ज़र्रे-ज़र्रे से अयां[1] आसारे-हरबो-जंग[2] है॥
किशवरे-हिन्दोस्तां[3] में रात को हङ्गामे-ख्वाब[4]।
करवटें रह-रह के लेता है फ़ज़ा[5] में इंक़िलाब॥
गर्म है सोज़े-बगावत[6] से जवानों का दिमाग़।
आँधियां आने को हैं ऐ बादशाही के चिराग़॥
हम वफ़ादाराने-पेशीं,[7] हम गुलामाने-कुहन[8]।
क़ब्र जिनकी खुद चुकी, तैयार है जिनका कफ़न॥
तुंदरौ[9] दरिया के धारे को हटा सकते नहीं।
नौजवानों की उमंगों को दबा सकते नहीं॥
चौंकिये जल्दी, हवा-ए-तुंदो-गर्म आने को है।
ज़र्रा-ज़र्रा आग में तबदील हो जाने को है॥

---

१. प्रकट २. युद्ध के लक्षण ३. भारत देश ४. स्वप्न
५. वातावरण ६. विद्रोह-ज्वाला ७. प्रथम पंक्ति के वफ़ादार
८. पुराने दास ९. तीव्र गति से बहने वाले

मक़तले-कानपुर*

ऐ सियहरू[1], बेहया, वहशी, बदगुमां।
ऐ जबीने-अर्ज़ के[2] दाग़, ऐ दानि-ए-हिन्दोस्तां[3] ॥
तुझ पै लानत ऐ फिरंगी के गुलामे-बेशऊर[4]।
ये फ़ज़ा-ए-सुलहपरवर,[5] ये क़तले-कानपूर[6] ॥
तेग़े-बुर्रां[7] और औरत का गला क्यों बदसिफ़ात[8]।
छूट जायें तेरी नब्ज़ें टूट जायें तेरे हात ॥
कोहनियों से ये तेरी कैसा टपकता है लहू ?
ये तो है ऐ संगदिल बच्चों का खूने-मुश्कबू[9] ॥
दर्द है तो उससे लड़ पहले जो मारे फिर मरे।
तू ने बच्चों को चबा डाला, खुदा ग़ारत करे ॥
तू ने ओ बुज़दिल ! लगाई है घरों में जिन के आग।
क्या उन्हीं हाथों में लेगा रख़्शे-आज़ादी की[10] बाग ॥
इस तरह इन्सान और शिद्दत[11] करे इन्सान पर।
तुफ़ है तेरे दीन[12] पर, लानत तेरे ईमान पर ॥

---

* यह कविता १९३१ में कानपुर में हुए हिन्दू-मुस्लिम फ़िसाद पर लिखी गई थी।

१. काले मुँह वाले २. धरती के माथे के ३. भारत के कमीन ४. मूर्ख दास ५. शांतिवर्धक वातावरण ६. कानपुर का रक्तपात ७. काटने वाली तलवार ८. दुष्ट ९. सुगंधित रक्त १०. स्वतन्त्रता रूपी घोड़े की ११. अत्याचार १२. धर्म

ग़द्दार से ख़िताब

उंगलियाँ उठेंगी दुनिया में तेरी औलाद पर।
ग़लग़ला[1] होगा वो आते हैं रज़ालत के पिसर[2] ॥
तेरी मस्तूरात का[3] बाज़ार में होगा क़याम[4]।
मारिज़े-दुश्नाम[5] में तेरा लिया जायेगा नाम ॥
उस तरफ़ मुँह करके थूकेगा न कोई नौजवाँ।
बर की हसरत में रहेंगी तेरे घर की लड़कियाँ ॥
क्या जवानों के ग़ज़ब का जिक्र ओ इब्ने-ख़िताब[6]।
सुन के तेरा नाम उड़ जायेगा बूढ़ों का ख़िज़ाब ॥
फ़ाश[7] समझी जायेगी महलों में तेरी दास्ताँ।
काँप उठेंगी ज़िक्र से तेरे कँवारी लड़कियां ॥
आयेगा तारीख़ का जिस वक्त जुंबिश[8] में क़लम।
क़ब्र तेरी दे उठेगी लौ जहन्नुम की कसम ॥

---

१. शोर २. नीचों की संतान ३. महिलाओं का ४. निवास
५. गाली के रूप में ६. उपाधि के पुत्र ७. अश्लील ८. गति

जवाले-जहांबानी*

नज़र है क़िबला-ए-मज़दूर[1] पर मेमारे-फ़ितरत की[2] ।
तलातुम[3] में है क़सरे-आहनी[4] सरमायादारी का ।।
शहाने-कजकुलह पर[5] तंग है आलम[6] की पहनाई[7] ।
दरे-दहक़ां पे[8] दस्तक दे रही है शाने-दाराई[9] ।।

जहांबानी दहकती आग है गिरती हुई बिजली ।
हमेशा इसने दुनिया में किया दौरे–महन[10] पैदा ।।
हज़ारों तजरबों के बाद अब इन्सां ये समझा है ।
कि शाही से नहीं होता शराफ़त का चलन पैदा ।।
सुन ऐ ग़ाफ़िल कि ता रोज़े-क़यामत[11] नस्ले-शाही से ।
न होगा बज़्मे-इन्सानी[12] का सदरे-अंजुमन[13] पैदा ।।

न हो मग़रूर अगर मायल-ब-नर्मी[14] भी हो सुलतानी ।
कि ये भी एक सूरत है तुझे ग़ाफ़िल बनाने की ।।
गये वो दिन कि तू ज़िंदां[15] में जब आंसू बहाता था ।
ज़रूरत है क़फ़स[16] पर अब तुझे बिजली गिराने की ।।

---

* साम्राज्यशाही का पतन

१. पूज्य मजदूर २. प्रकृति के बनाने वाले की ३. तूफान ४. लोह-महल ५. बांके बादशाहों पर ६. संसार ७. विशालता ८. किसान के दरवाजे पर ९. बादशाही शान ('दारा' ईरान का एक प्रसिद्ध बादशाह हो गुजरा है) १०. दुखों का काल ११. प्रलय तक १२. मानव-सभा १३. सभापति १४. नर्मी की ओर प्रवृत्त १५-१६. कारागार ।

शिकस्ते-ज़िंदां*

क्यों हिंद का ज़िंदां[1] कांप रहा है गूंज रही हैं तकबीरें[2] ।
उकताये हैं शायद कुछ क़ैदी और तोड़ रहे हैं ज़ंजीरें ।।

दीवारों के नीचे आ-आकर यूं जमअ हुए हैं ज़िंदानी ।
सीनों में तलातुम[3] बिजली का आंखों में झलकती शमशीरें ।।

भूखों की नज़र में बिजली है तोपों के दहाने ठंडे हैं ।
तक़दीर के लब[4] को जुंबिश है[5] दम तोड़ रही हैं तदबीरें[6] ।।

आंखों में गदा[7] की सुर्खी है बेनूर[8] है चेहरा सुलतां[9] का ।
तखरीब[10]ने परचम[11]खोला है,सजदे में पड़ी हैं तामीरें[12] ।।

क्या उनको ख़बर थी ज़ेरो-ज़बर[13] रखते थे जो रूहे-मिल्लतको[14] ।
उबलेंगे ज़मीं से मारे-सियह[15]बरसेंगी फ़लक[16]से शमशीरें ।।

क्या उनको ख़बर थी सीनों से जो खून चुराया करते थे ।
इक रोज़ इसी खामोशी से टपकेंगी दहकती तक़रीरें[17] ।।

संभलो कि वो ज़िंदां गूंज उठा, झपटो कि वो क़ैदी छूट गये ।
उठो कि वो बैठीं दीवारें दौड़ो कि वो टूटी ज़ंजीरें ।।

---

* कारागार का टूटना

१. कारागार २. अल्लाह अकबर का नारा ३. तूफ़ान ४. होंट ५. हिल रहे हैं ६. उपाय ७. भिखारी ८. ज्योतिहीन ९. बादशाह १० ध्वंस ११. पताका १२. निर्माण १३. दबाकर १४. जाति की आत्मा को १५. काले नाग १६. आकाश १७. भाषण

हुब्बे-वतन और मुसलमान

मज़हबी इख़लाक़ के जज़्बे को ठुकराता है जो।
आदमी को आदमी का गोश्त खिलवाता है जो॥
फ़र्ज़ भी कर लूं कि हिन्दू हिन्द की रुसवाई है।
लेकिन इसको क्या करूं फिर भी वो मेरा भाई है॥
बाज़ आया मैं तो ऐसे मज़हबी ताऊन[1] से।
भाइयों का हाथ तर हो भाइयों के ख़ून से॥
तेरे लब पर[2] है इराक़ो-शामो-मिस्रो-रोमो-चीं।
लेकिन अपने ही वतन के नाम से वाक़िफ़ नहीं॥
सबसे पहले मर्द बन हिन्दोस्तां के वास्ते।
हिन्द जाग उट्ठे तो फिर सारे जहां के वास्ते॥

१. प्लेग २. होंटों पर

इस्तक़लाले-मैकदा*

वक्त हूँ, हां वक्त, ऐ पैग़म्बरे-तेग़ो-हिलाल[1] ।
ऐ रजज़ख़्वाने-जलाल[2]-ओ ऐ ग़ज़लख़्वाने-जमाल[3] ॥

ज़ीस्त[4] की पलकें झपकती हैं मेरे अंदाज़ पर ।
कारवाने-दहर[5] चलता है मेरी आवाज़ पर ॥

गर्दिशों का[6] शाह, सुबहो-शाम का सरखेल[7] हूँ ।
जुंबिशों का कारवां, आवारगी का सेल[8] हूँ ॥

सुन कि अब मुड़ते हुए तूफ़ां के धारे और हैं ।
अब मेरे चांद और हैं, मेरे सितारे और हैं ॥

अब मेरी रौ और है, अब मेरे जादे[9] और हैं ।
अब मेरा अज़्म[10] और है, मेरे इरादे और हैं ॥

जा रहा हूं आस्ताने-शह से[11] पैमां[12] तोड़ कर ।
कारवां आया है अब मेरा अनोखे मोड़ पर ॥

इस तेरे मैख़ाना-ए-रंगीं में ऐ जादूबयां ।
रह नहीं सकता है इंग्लिस्तान अब पीरे-मुग़ां[13] ॥

* शराबखाने का स्थायित्व

१. तलवार और पहली रात के चांद के दूत २-३. तेज और सौंदर्य के गुण गानेवाले ४. जीवन ५. संसार का कारवान ६. कालचक्रों का ७. सरदार ८. धारा ९. मार्ग, मंज़िलें १०. संकल्प ११. बादशाह की चौखट से १२. प्रण १३. अग्नि पूजकों का सरदार (साक़ी)

सर उठा, सीने को तान ऐ शायरे-सहबागुसार[1] ।
ले ये तेरे मैकदे की है कलीदे-ज़रनिगार[2] ।।

(२)

गोशे-गुल से[3] आसमां तक नाला-ए-बुलबुल[4] गया ।
मैकदे का क़ुफ़ले-ज़रीं[5] लो वो चट से खुल गया ।।

(३)

(*अन्दरूने-मैकदा*)
(शराब-खाने के भीतर)

हाय ये क्या इब्तिला,[6] अफ़सुर्दगी[7], आवारगी ।
बेनवाई[8], बेक़रारी, बेदिली, बेचारगी ।।
परफ़िशां थी[9] जिसमें रूहे-बादह[10] वो रतले गिरां[11] ।
ख़ाक के तोदों[12] के नीचे ले रहा है हिचकियां ।।
बामो-दर पर आबो-रोग़न है न क़ंदीलों में नूर[13]।
मसनदे-ज़र[14] तार तार औ' जामे-रंगीं[15] चूर चूर ।।
ये घुटन, ये बू, ये तारीकी[16], ये सेलन, ये जमूद[17]।
एक पत्थर सा हवा के दोश पर,[18] अंबर न ऊद ।।

---

१. शराब छोड़ने वाले कवि २. स्वर्णिम ताली ३. फूल के कान से ४ बुलबुल का आर्त्तनाद ५. स्वर्णिम ताला ६. विपत्ति ७. उदासी ८. बेसामानी ९. पंख फटफटाती थी १०. शराब की आत्मा ११. बड़ा पैमाना १२. ढेरों । १३. छत और दरवाज़ों पर रोग़न है न कान्ति, न दीपपात्रों में ज्योति है । १४. स्वर्णिम सिंहासन १५. रंगीन प्याला १६. अंधेरा १७. शैथिल्य १८. कंधे पर

दूर तक गूंजा हुआ है कुश्ताशमओं का[1] धुआं।
मुग़बचों के[2] जिस्म पर हैं पारा पारा[3] वर्दियां॥
मैकदा और मैकदे के साये में ये भूख प्यास।
खुश्क होंटों पर फुग़ां,[4] नमनाक आंखों में हरास[5]॥
मखमली पर्दों पे लातादाद छुरियों के शिगाफ़[6]।
खुम के[7] गिर्दो-पेश[8] मकड़ी का ये बेपरवा तवाफ़[9]॥
आंसुओं से हर सबू की[10] आंख है छलकी हुई।
गरदने-मीना[11] है बारे-कर्ब से[12] ढलकी हुई॥
अस्सलाम[13] ऐ मैकशो, जिन का कोई साक़ी नहीं।
जिन के साग़र में सुराबी-मौज[14] भी बाक़ी नहीं॥
बारगाहे-ईद[15] के ऐ रोज़ादारो अस्सलाम।
खुश्क मैख़ाने के प्यासे बादाख़्वारो अस्सलाम॥

(४)

(अरबाबे-मैकदा का रद्दे-अमल)

(शराब-खाने के पात्रों की प्रतिक्रिया)

आगये? क्या आगये? हां आ गये, तुम दोस्तो।
हां उठो, ऐ मैकदे के साथियो जल्दी उठो॥

---

१. बुझे हुए दीपों का २. सेवक लड़कों ३. चीथड़ा-चीथड़ा ४. आर्त्तनाद ५. भय ६. छिद्र ७. शराब के मटके ८. इर्द-गिर्द ९. चक्कर काटना। १०. मटके की ११. सुराही की गरदन १२. वेदना के बोझ से १३. नमस्कार १४. मरीचिका की (झूठी) लहर १५. महल, जहाँ ईद मनाई जाती है

आह, जोड़ों में लचकने का ज़रा भी दम नहीं।
तुम मगर दर आये[1] मैखाने में अब कुछ ग़म नहीं॥
लड़खड़ाते हैं क़दम, लुत्फ़ो-करम से काम लो।
दोस्तो, दम चढ़ रहा है, बढ़ के बाजू थाम लो॥
आने वाले दोस्तों के खैरमक़दम[2] को बढ़ो।
मैकदे के नौजवानो, खुशदिली से काम लो॥
तक रहे हो किस लिए बूढ़ों का मुँह अहले-शराब[3]।
हां उठाओ, सागरे-जां-आफ़रीं[4] छेड़ो रबाब[5]॥

(५)

क्या कहा बाबा, यहां और सागरे-जां-आफ़रीं?
यूं लुटा है मैकदा, मिट्टी के भी बरतन नहीं।
और किसे छेड़ें? रबाबे-मुर्दा में दमखम कहां?
अब वो अगला सा हमारी बज़्म[6] का आलम[7] कहां?

(६)

(*मैकदे में आने वालों का जवाब*)

कुछ नहीं परवा, नये पैमाने ढाले जायंगे।
एक क्या, सौ जश्न के पहलू निकाले जायंगे॥
डगडगाकर अब पियेंगे हम शराबे-गुलफ़िशां[8]।
गायेंगे, नाचेंगे, झूमेंगे, ज़मीनो-आस्मां॥

---

१. प्रवेश कर आये। २. स्वागत ३. शराब रखने वालो ४. जीवन दाता प्याला ५. साज़ ६. सभा ७. हालत ८. फूल बिखेरने वाली शराब

चाक[1] हो हाँ चाक हो पर्दो अन्धेरी रात के।
नाखुने-खुरशीद,[2] उक़दे खोल दे ज़र्रात के[3] ॥
बुलबुलों के चहचहो, छा जाओ सौते-ज़ाग़ पर[4]।
अब्र[5] के आवारा टुकड़ो, मिल के बरसो बाग़ पर ॥
कौसरो[6] गंगा के यारो, एक हो मिलकर बहो।
मौत के ग़ुल[7] को निगल लो ज़िन्दगी के चहचहो ॥
सल्तजाँ इफ़लास[8], छा जा नीमजाँ–अमलाक पर[9]।
ऐ ज़मीने–सर्द बढ़कर हात डाल अफ़लाक पर[10] ॥
हां तजल्ली[11] के मुनारे बन के उभरो पस्तियो।
बोलते शहरों में हो तबदील गूँगी बस्तियो ॥
ऐ जवाँहिम्मत अदीबो[12] खुफ़्ता अज़्मों को[13] जगाओ।
ऐ तजल्ली के पयम्बर[14] शायरो, शम्में जलाओ ॥
ऐ फ़ज़ा[15] गुलपैरहन हो[16] ऐ सबा[17] इठला के चल।
ऐ ज़मीं, अंगड़ाई ले, ऐ आस्मां करवट बदल ॥
हुक्म दे सरमायादारी को दिखाये अब न भाओ।
सनअ़तो ! मेहनतकशों के आस्ताँ पर[18] सर झुकाओ ॥
खाक को गर्माओ, कुहसारों पे[19] नेज़े गाड़ कर।
सुर्ख़ किरनो, मुस्कराओ बादलों को फाड़ कर ॥

---

१. फट जाओ २. सूरज के नाखुन ३. अणुओं की गाँठें (समस्याएँ) खोल दो ४. कव्वों की आवाज़ पर ५. बादल ६. स्वर्ग की नदी का नाम ७. शोर ८. निर्धनता ९. अधमुई पूँजी पर १०. आकाश पर ११. आलोक १२. साहसी लेखको १३. सोये हुए संकल्पों को १४. दूत १५. वातावरण १६. पूलों के वस्त्र पहन १७. प्रभात समीर १८. चौखट पर १९. पर्वतों पर

आग के धारो बहो, लोहे के पहियो ग़नग़नाओ।
हाँ मशीनो घड़घड़ाओ, बिजलियो जुंबिश में आओ॥
मुस्करा तख़रीब[1] पर, तख़रीब रोती है यूँही।
धूप से लड़, अब्र की तामीर[2] होती है यूँही॥
हाँ तन-आसानी की डायन को पटक दे ऐ वतन।
धूप पर अपने पसीने को छिड़क दे ऐ वतन॥
ओस पड़ जायेगी, ख़ूनी धूप संवला जायेगी।
जब चलेगा झूम कर, सावन की रुत आ जायेगी॥

---

१. ध्वंस २. निर्माण

मातमे आज़ादी

शाख़ें हुईं दोनीम[1] जो ठंडी हवा चली,
गुम हो गई शमीम[2] जो बादे-सबा[3] चली,
अंग्रेज ने वो चाल बज़ोरो–जफ़ा चली,
बरपा हुई बरात के घर में चला–चली,
अपना गला ख़रोशे–तरन्नुम से[4] फट गया।
तलवार से बचा तो रगे–गुल[5] से कट गया॥

सिक्कों की अंजुमन के ख़रीदार आ गये,
सेठों के ख़ादमाने–वफ़ादार[6] आ गये,
खद्दर पहन पहन के बद-अतवार[7] आ गये,
दर[8] पर सफ़ेदपोश सियहकार[9] आ गये,
दुश्मन गये तो दोस्त बने दुश्मने–वतन।
ख़िलअ़त की[10] तह खुली तो बरामद हुआ कफ़न॥

बरतानिया के ख़ास ग़ुलामाने–ख़ानाज़ाद,[11]
देते थे लाठियों से जो हुब्बे–वतन की[12] दाद,
एक एक ज़रब[13] जिन की है अब तक सिरों की याद,
वो आई० सी० एस० अब भी हैं खुशबख्तो–बामुराद[14],
शैतान एक रात में इन्सान बन गये।
जितने नमक-हराम थे कप्तान बन गये॥

---

१. दो टुकड़े २. महक ३. प्रभात समीर ४. स्वर के ज़ोर से ५. फूल की नस ६. वफ़ादार सेवक ७. दुश्चरित्र ८. दरवाजे ९. काली करतूतों वाले १०. भेंट किये हुए बहुमूल्य वस्त्र की ११. घर के पले हुए दास १२. देश-प्रेम की १३. चोट १४. भाग्यशाली

फुटकर

इन बुज़दिलों के हुस्न पै शैदा[1] किया है क्यों ?
नामर्द क़ौम में मुझे पैदा किया है क्यों ?

◇ ◇ ◇

नहंगों का[2] समन्दर हूं, दरिंदों का बयाबां हूं,
उदू[3] से क्या ग़रज़ अपनों से ही दस्तो-गरेबां हूं[4] ,
खुदा के फ़ज़्ल से[5] बदबख़्त हूं, बुज़दिल हूं, नादां हूं,
मेरी गर्दन में है तौक़े-ग़ुलामी पा-ब-जौलां[6] हूं,
दरे-आक़ा[7] पै सर है, कफ़शबरदारी पे[8] नाज़ां[9] हूं।

◇ ◇ ◇

गरदन का तौक़ पांव की ज़ंजीर काट दे।
इतनी गुलाम क़ौम में हिम्मत कहां है 'जोश' ?

अपनी तबाहियों पे कभी ग़ौर कर सके।
इतनी ज़लील मुल्क को फ़ुर्सत कहां है 'जोश' ?

इक हर्फ़े-गर्म[10] सुनते ही लौ दे उठे दिमाग़।
हिन्दोस्तान में वो हरारत[11] कहां है 'जोश' ?

---

१. मोहित २. घड़ियालों का ३. दुश्मन ४. लड़ रहा हूँ ५. कृपा से ६. पांव में बेड़ियां पहने हुए ७. स्वामी की चौखट पर ८. जूते उठाने पर ९. गर्वी १०. अप्रिय शब्द ११. गर्मी

रिश्वत*

लोग हम से रोज़ कहते हैं ये आदत छोड़िये,
ये तिजारत है ख़िलाफ़े-आदमियत[1] छोड़िये,
इस से बदतर[2] लत[3] नहीं कोई, ये लत छोड़िये,
रोज़ अख़बारों में छपता है, कि रिश्वत छोड़िये,
भूल कर भी जो कोई लेता है रिश्वत, चोर है।
आज क़ौमी पागलों में रात दिन ये शोर है॥
किसको समझायें इसे खो दें तो फिर पायेंगे क्या?
हम अगर रिश्वत नहीं लेंगे तो फिर खायेंगे क्या?
क़ैद भी कर दें तो हम को राह पर लायेंगे क्या?
'ये जुनूने-इश्क़[4] के अंदाज़ छुट जायेंगे क्या'?
मुल्क भर को क़ैद कर दे किस के बस की बात है।
ख़ैर से सब हैं, कोई दो चार दस की बात है॥
ये हवस[5], ये चोरबाज़ारी, ये महंगाई, ये भाओ,
राई की क़ीमत हो जब परबत तो क्यों आये न ताओ,
अपनी तनख़्वाहों के नाले में है पानी आध पाओ,
और लाखों टन की भारी अपने जीवन की है नाओ,
जब तलक रिश्वत न लें हम दाल गल सकती नहीं।
नाव तनख़्वाहों के पानी में तो चल सकती नहीं॥

---

* इस कविता के २३ बंद हैं। यहाँ केवल १७ दिये जा रहे हैं।

१. मानवता विरोधी २. बुरी ३. आदत ४. इश्क़ का सा उन्माद ५. लोलुपता

ये है मिल वाला, वो बनिया, औ' ये साहूकार है,
ये है दूकांदार, वो है वैद, ये अत्तार है,
वो अगर ठग है, तो ये डाकू है, वो बटमार है,
आज हर गरदन में काली जीत का इक हार है,
हैफ़[1] ! मुल्को-क़ौम की ख़िदमतगुज़ारी के लिए।
रह गए हैं इक हमीं ईमानदारी के लिए॥

भूख के क़ानून में ईमानदारी जुर्म है,
और बेईमानियों पर शर्मसारी[2] जुर्म है,
डाकुओं के दौर में[3] परहेज़गारी जुर्म है,
जब हुकूमत ख़ाम[4] हो तो पुख़्ताकारी[5] जुर्म है,
लोग अटकाते हैं क्यों रोड़े हमारे काम में ?
जिसको देखो, ख़ैर से नंगा है वो हम्माम में॥

देखिये जिसको दबाये है बग़ल में वो छुरा,
फ़र्क़ क्या इसमें कि मुजरिम सख़्त है या भुरभुरा,
ग़म तो इसका है ज़माना है कुछ ऐसा खुरदरा,
एक मुजरिम दूसरे मुजरिम को कहता है बुरा,
हम को जो चाहें सो कह लें हम तो रिश्वतख़ोर हैं।
नासहे-मुशफ़िक़[6] भी तो, अल्लाह रखे, चोर हैं॥

तोंद वालों की तो हो आईनादारी,[7] वाहवा,
और हम भूखों के सर पर चांदमारी, वाहवा,
उनकी ख़ातिर सुबह होते ही नहारी[8] वाहवा,
और हम चाटा करें ईमानदारी वाहवा,

१. खेद २. लज्जित होना ३. काल में ४. अपक्व ५. परिपक्व करना ६. स्नेहयुक्त धर्मोपदेशक ७. रक्षा ८. नाश्ता

सेठ जी तो खूब मोटर में हवा खाते फिरें।
और हम सब जूतियां गलियों में चटख़ाते फिरें॥

इस गिरानी[1] में भला क्या गुंचा-ए-ईमां[2] खिले,
जौ के दाने सख़्त हैं, तांबे के सिक्के पिलपिले,
जायें कपड़े के लिए तो दाम सुनकर दिल हिले,
जब गरेबां ता-ब-दामन आये तो[3] कपड़ा मिले,

जान भी दे दें तो सस्ते दाम मिल सकता नहीं।
आदमियत का कफ़न है दोस्तो, कपड़ा नहीं॥

सिर्फ़ इक पतलून सिलवाना क़यामत हो गया,
वो सिलाई ली मियां दर्ज़ी ने नंगा कर दिया,
आपको मालूम भी है चल रही है क्या हवा,
सिर्फ़ इक टाई की क़ीमत घोंट देती है गला,

हल्की टोपी सर पे रखते हैं तो चकराता है सर।
और जूते की तरफ़ बढ़िये तो झुक जाता है सर॥

थी बुजुर्गों की जो बनयाइन वो बनिया ले गया,
घर में जो गाढ़ी कमाई थी वो गाढ़ा ले गया,
जिस्म की एक एक बोटी गोश्त वाला ले गया,
तन में बाकी थी जो चरबी घी का पीपा ले गया,

आई तब रिश्वत की चिड़िया पंख अपने खोलकर।
वरना मर जाते मियां कुत्ते की बोली बोलकर॥

---

१. महंगाई २. धर्म रूपी कली ३. वस्त्र चीथड़ा-चीथडा हो जाय तो

पत्थरों को तोड़ते हैं आदमी के उस्तख़्वां[1] ,
संगबारी[2] हो तो बन जाती है हिम्मत सायबां[3],
पेट में लेती है लेकिन भूख जब अंगड़ाइयाँ,
और तो और, अपने बच्चे को चबा जाती है मां,
क्या बतायें बाज़ियां हैं किस क़दर हारे हुए।
रिश्वतें फिर क्यों न लें हम भूख के मारे हुए ?

आप हैं फ़ज़्ले-खुदा-ए-पाक[4] से कुर्सीनशीं[5] ,
इंतिज़ामे-सल्तनत[6] है आप के ज़ेरे-नगीं[7] ,
आस्मां है आपका ख़ादिम तो लौंडी है ज़मीं,
आप खुद रिश्वत के ज़िम्मेदार हैं फ़िदवी[8] नहीं,
बख़्शते हैं आप दरिया, कश्तियां खेते हैं हम।
आप देते हैं मवाक़े,[9] रिश्वतें लेते हैं हम॥

ठीक तो करते नहीं बुनियादे-नाहमवार[10] को,
दे रहे हैं गालियां गिरती हुई दीवार को,
सच बताऊं, ज़ेब[11] ये देता नहीं सरकार को,
पालिये बीमारियों को, मारिये बीमार को,
इल्लते-रिश्वत को[12] इस दुनिया से रुख़सत[13] कीजिये।
वरना रिश्वत की धड़ल्ले से इजाज़त दीजिये॥

---

१. हड्डियां २. पत्थरों की वर्षा ३. छत्रछाया ४. भगवान की कृपा से ५. कुर्सी पर बैठे हुए (अधिकारी) ६. राज-काज ७. हुक्म के मातहत ८. सेवक ९. अवसर १०. असमतल नींव ११. शोभा १२. रिश्वत के दुर्व्यसन को १३. विदा

दस्तकारी के उफ़क़ पे[1] अब्र[2] बन कर छाइये,
जिहल[3] के ठंडे लहू को इल्म[4] से गरमाइये,
कारखाने कीजिये क़ायम, मशीनें लाइये,
उन ज़मीनों को जो महवे-ख़्वाब[5] हैं चौंकाइये,
ख़्वाह कुछ भी हो मंढे ये बेल चढ़ सकती नहीं।
मुल्क में जब तक कि पैदावार बढ़ सकती नहीं॥
बादशाही तख़्त पर है आज हर शै जलवागर,[6]
फिर रहे हैं ठोकरें खाते ज़रो-लालो-गोहर[7]
ख़ास चीजें ? क़ीमतें उनकी तो हैं अफ़लाक पर[8]
आबख़ोरा[9] मुँह फुलाता है अठन्नी देखकर,
चौदह आने सेर की आवाज़ सुनकर आजकल।
लाल हो जाता है गुस्से से टमाटर आजकल॥
नसतरन[10] में नाज़ बाक़ी है न गुल[11] में रंगो-बू,
अब तो है सहने-चमनमें[12] ख़ारो-ख़स की[13] आबरू,
खुरदनी चीज़ों के[14] चेहरों से टपकता है लहू,
रुपिये का रंग फ़क़ है अशरफ़ी है ज़र्दरू[15],
हाल[16] के सिक्के को माज़ी[17] का जो सिक्का देख ले।
सौ रुपये के नोट के मुँह पर दवन्नी थूक दे॥

---

१. क्षितिज पर २. बादल ३. अपढ़ता (मूढ़ता) ४. विद्या ५. निद्रा-मग्न ६. सुशोभित (अर्थात् हर वस्तु की कीमत बहुत बढ़ गई है) ७. धन ८. आकाश पर ९. मिट्टी का बना पानी पीने का बरतन १०. श्वेत रंग का एक सुगंधित फूल ११. गुलाब का फूल १२. बाग़ १३. कांटों और सूखी घास की १४. खाद्य पदार्थों के १५. जिसका मुँह पीला पड़ चुका है १६. वर्तमान १७. अतीत

वक्त से पहले ही आई है क़यामत देखिये,
मुँह को ढांपे रो रही है आदमियत देखिये,
दूर जाकर किस लिए तसवीरे-इबरत[1] देखिये,
अपने क़िबला 'जोश' साहब ही की हालत देखिये,
इतनी गम्भीरी पे भी मर मर के जीते हैं जनाब।
सौ जतन करते हैं तो इक घूंट पीते हैं जनाब॥

१. शोच्य दृश्य

आदमी

खुशियां मनाने पर भी है मजबूर आदमी,
आँसू बहाने पर भी है मजबूर आदमी,
और मुस्कराने पर भी है मजबूर आदमी,
दुनियां में आने पर भी है मजबूर आदमी,
दुनिया से जाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी[1] ।

मजबूरो–दिलशिकस्ता–ओ–रंजूर[2] आदमी,
ऐ वाये आदमी ।।

क्या बात आदमी की कहूँ तुझ से हमनशीं,[3]
इस नातवां[4] के क़ब्ज़ा–ए–कुदरत[5] में कुछ नहीं,
रहता है गाह[6] हुजरा-ए-एजाज़[7] में मकीं[8]
पर ज़िन्दगी उलटती है जिस वक्त आस्तीं,
इज्ज़त गंवाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी ।

इन्सान को हवस है जिये सूरते-खिज़र,[9]
ऐसा कोई जतन हो कि बन जाइये अमर,

---

१. वाह रे आदमी २. विवश, भग्नहृदय, शोकग्रस्त ३. साथी ४. बेचारे (निर्बल) ५. हाथ ६. कभी ७. आध्यात्मिक उपासना की कोठरी ८. वासी ९. एक दीर्घ आयु पैगम्बर खिज्र की तरह

ता-रोज़े-हश्र,[1] मौत न फटके इधर-उधर,
पर ज़ीस्त[2] जब बदलती है करवट कराह कर,
तो सर कटाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

दिल को बहुत है हँसने हँसाने की आरज़ू,
हर सुबहो-शाम जश्न मनाने की आरज़ू,
गाने की और ढोल बजाने की आरज़ू,
पीने की आरज़ू है पिलाने की आरज़ू,
और ज़हर खाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

हर दिल में है निशातो मुसर्रत[3] की तिशनगी,[4]
देखो जिसे वो चीख़ रहा है "खुशी, खुशी,"
इस कारगाहे-फ़ितना में[5] लेकिन कभी कभी,
फ़रज़न्दे-नौजवानो उरूसे-जमील[6] की,
मय्यत[7] उठाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

हर दिल का हुक्म है कि रफ़ाक़त[8] का दम भरो,
अहबाब को[9] हंसाओ मियाँ, आप भी हंसो,
छूटे न दोस्ती का तअ़ल्लुक़, जो हो सो हो,

---

१. प्रलय तक २. जीवन ३. रस या आनन्द ४. प्यास ५. झगड़े के कारखाने (संसार) ६. नौजवान बेटे और सुन्दर दुल्हन ७. शव ८. साहचर्य्य ९. मित्रों को

लेकिन ज़रा सी देर में यारानें-ख़ास[1] को,
ठोकर लगाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

मक्खी भी बैठ जाये कभी नाक पर अगर,
ग़ैरत से हिलने लगता है मरदानगी का सर,
इज्ज़त पे हरफ़ आये तो देता है बढ़ के सर,
और गाह[2] रोज़ ग़ैर के बिस्तर पै रात भर,
जोरू सुलाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

रिफ़अ़त-पसंद[3] है बहुत इन्सान का मिज़ाज,[4]
परचम[5] उड़ा के, शान से रखता है सर पे ताज,
होता है ओछेपन के तसव्वुर[6] से इख़्तिलाज[7],
लेकिन हर इक गली में ब-फ़रमाने एहतजाज,[8]
बन्दर नचाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

दिल हात से निकलता है जिस बुत की चाल से,
मौजें[9] लहू में उठती हैं जिसके ख़याल से,
सर पर पहाड़ गिरता है जिसके मलाल[10] से,
यारो कभी कभी उसी रंगीं-जमाल[11] से,
आखें चुराने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

---

१. इष्टमित्रों २. कभी ३. ऊँचाई को पसन्द करने वाला ४. स्वभाव ५. पताका ६. कल्पना ७. हृदय कंपन ८. आज्ञानुसार ९. लहरें १०. दुःख ११. अति सुन्दरी

ग़ज़ल

फ़िक्र[1] ही ठहरी तो दिल को फ़िक्रे-खूबां[2] क्यों न हो ?
ख़ाक होना है तो ख़ाके-कूए-जानां[3] क्यों न हो ?

दहर में[4] ऐ ख़्वाजा[5] जब ठहरी असीरी[6] नागुज़ीर[7] ।
दिल असीरे-हल्क़ए-गेसूए-पेचां[8] क्यों न हो ?

ज़ीस्त[9] है जब मुस्तक़िल आवारागर्दी ही का नाम ।
अक़्ल वालो ! फिर तवाफ़े-कूए-जानां[10] क्यों न हो ?

इक न इक हंगामे पर मौक़ूफ़[11] है जब ज़िंदगी ।
मैकदे में रिंद[12] रक़्सानो-ग़ज़लख़्वां[13] क्यों न हो ?

जब फ़रेबों ही में रहना है तो ऐ अहले-ख़िरद[14] ।
लज्ज़ते-पैमाने-यारे-सुस्तपैमां[15] क्यों न हो ?

यां जब आवेज़िश[16] ही ठहरी है तो ज़र्रे[17] छोड़कर ।
आदमी ख़ुरशीद[18] से दस्ते-गरेबां[19] क्यों न हो ?

इक न इक जुलमत[20] से जब वाबस्ता रहना है तो 'जोश' ।
ज़िंदगी पर साया-ए-जुल्फ़े-परीशां[21] क्यों न हो ?

---

१. चिंता २. अच्छी वस्तुओं की ३. प्रेयसी की गली की ख़ाक ४. संसार में ५. दार्शनिक ६. बंदी होना ७. अनिवार्य ८. पेचदार केशों का बंदी ९. जीवन १०. प्रेयसी की गली के चक्कर काटना ११. आधारित १२. मद्यप १३. क्यों न नाचें गाएं १४. बुद्धि-जीवी १५. प्रतिज्ञा भंग करने वाली प्रेयसी की प्रतिज्ञा से आनन्दित १६. संघर्ष १७. अणु १८. सूरज १९. संघर्षशील २०. अन्धेरे २१. अस्तव्यस्त केशों की छाया

कुछ चुने हुए शेर

दिल की पामाली पे नादां को तरस खाने भी दो।
रोकने से फ़ायदा नासेह[1] को समझाने भी दो॥

◇ ◇ ◇

तुझ को इन नींद की तरसी हुई आंखों की क़सम।
अपनी रातों को मेरे हिज्र[2] में बरबाद न कर॥

◇ ◇ ◇

मुस्कराते हुए यूं आये वो मैख़ाने में।
रुक गई सांस छलकते हुए पैमाने में॥

◇ ◇ ◇

आज फिर बेदार[3] मेरे दिल में उनकी याद है।
ऐ ज़मीं फ़र्याद है, ऐ आस्मां फ़र्याद है॥

◇ ◇ ◇

किस तरह क़ुर्बे-यार पर[4] शुक्रे-खुदा करूं?
अब भी है दिल में कोई तमन्ना सी, क्या करूं?

◇ ◇ ◇

देख जाओ कि होश आया है।
फिर हमारी ख़बर न पाओगे॥

◇ ◇ ◇

शब को आंखें लड़ीं हुए ख़ामोश।
सुबह देखा तो राज़ अफ़शां[5] था॥

---

१. उपदेशक २. विछोह ३. जागी हुई ४. प्रेयसी के सामीप्य पर ५. प्रकट

ऐसे चुप तो कभी न थे तुम 'जोश'।
सच बताओ ये माजरा क्या है ?

◇ ◇ ◇

हुई ये यकबयक[1] किस से मुलाक़ात।
कि ख़ुद अपने को याद आने लगा मैं॥

◇ ◇ ◇

शिकस्ता[2] होंगे रबाब[3] क्या-क्या, तबाह होंगे शबाब[4] क्या-क्या।
चलेंगे पीरी[5] के वार कितने, मगर ज़माना जवां रहेगा॥

◇ ◇ ◇

ये मोती हैं कि आंसू, फ़ैसला करने से डरता हूं।
चमक पर जब हयाते-आरज़ी[6] की ग़ौर करता हूं॥

◇ ◇ ◇

ऐ आस्मान ! तेरे ख़ुदा का नहीं है ख़ौफ़।
डरते हैं ऐ ज़मीन ! तेरे आदमी से हम॥

◇ ◇ ◇

वो ख़ुद अता[7] करे तो जहन्नुम[8] भी है बहिश्त[9]।
मांगी हुई निजात[10] मेरे काम की नहीं॥

◇ ◇ ◇

मुझे मालूम है जो कुछ तमन्ना है रसूलों की[11]।
मगर क्या दरहक़ीक़त[12] वो ख़ुदा की ही तमन्ना है ?

◇ ◇ ◇

सैंकड़ों हूरों का हर नेकी पे है इनको यक़ीं।
सूद[13] लेने में ख़ुदा से भी ये शर्माते नहीं॥

---

१. एकाएक २. भग्न ३. साज़ ४. यौवन ५. बुढ़ापे ६. अस्थाई जीवन ७. प्रदान ८. नरक ९. स्वर्ग १०. मुक्ति ११. पैग़म्बरों (अवतारों) की १२. वास्तव में १३. मुसलमानों में सूद लेना हराम है

हरम[1] हो, मदरसा[2] हो, दैर[3] हो, मसजिद कि मैख़ाना।
यहां तो सिर्फ़ जलवे की[4] तमन्ना है कहीं आजा॥

◇ ◇ ◇

मेरे रोने का जिसमें क़िस्सा है।
उम्र का बहतरीन हिस्सा है॥

◇ ◇ ◇

मौत से क़ब्ल[5] ज़िन्दगी कैसी।
जी रहा हूँ अभी ख़ुशी कैसी॥

◇ ◇ ◇

बर्ताव दोस्ती को हद से निकल गये हैं।
या तुम बदल गये हो या हम बदल गये हैं॥

◇ ◇ ◇

तुम्हारे सामने क्यों अश्क[6] मेरा बह नहीं सकता।
इसे महसूस कर सकता हूँ लेकिन कह नहीं सकता॥

◇ ◇ ◇

सब्र की ताक़त जो कुछ दिल में है खो देता हूँ मैं।
जब कोई हमदर्द मिलता है तो रो देता हूँ मैं॥

◇ ◇ ◇

जिस को तुम भूल गये याद करे कौन उसे।
जिसको तुम याद हो वो और किसे याद करे?

◇ ◇ ◇

---

१. काबा की चार-दीवारी २. पाठशाला ३. मन्दिर
४. साक्षात रूप में देखने की ५. पूर्व ६. आंसू

ये सुन कर हमने मैखाने में अपना नाम लिखवाया।
जो मैकश[1] लड़खड़ाता है वो बाज़ू थाम लेते हैं॥
सहर[2] तक चांद मेरे सामने रखता है अक्स[3] उनका।
सितारे शब[4] को मेरे साथ उनका नाम लेते हैं॥
नहीं मालूम क्या खोई हुई शै याद आती है।
हवा जब सर्द चलती है कलेजा थाम लेते हैं॥

◇ ◇ ◇

जो मौक़ा मिल गया तो ख़िज्र[5] से ये बात पूछेंगे।
जिसे हो जुस्तजू[6] अपनी, वो बेचारा कहां जाये?

◇ ◇ ◇

अब तो अक्सर ये हाल होता है।
सांस लेना वबाल[7] होता है॥
आह करना तो क्या तेरे आगे।
बात करना मुहाल होता है॥

◇ ◇ ◇

कहा जाता है मुझ से ज़िन्दगी इनआ़मे-कुदरत[8] है।
सज़ा क्या होगी उसकी, जिसका ये इनआ़म है ख़ाकी?
तबस्सुम[9] इक बड़ी दौलत है, मैं भी इसका क़ायल हूँ।
मगर ये आंसुओं का एक शीरीं[10] नाम है साक़ी॥

---

१. मद्यप २. सुबह ३. प्रतिबिम्ब ४. रात ५. एक दीर्घायु पैगम्बर, (खुदा की तलाश में भटकने वाला) ६. तलाश ७. अत्यन्त कठिन, मुसीबत ८. प्रकृति का पुरस्कार ९. मुस्कान १०. मधुर

लड़कपन ज़िद में रोता था, जवानी दिल को रोती है।
न जब आराम था साक़ी न अब आराम है साक़ी॥

◇ ◇ ◇

कहते हैं अहले-जहां[1] इश्क़े-मजाज़ी[2] जिसको।
वो भी है ऐन हक़ीक़त,[3] मुझे मालूम न था॥
दिल जब आता है तो दुनिया के किसी गोशे[4] में।
नहीं लगती है तबीयत, मुझे मालूम न था॥
जिसको भटका हुआ इन्सान खुशी कहता है।
वो भी है ग़म की अमानत, मुझे मालूम न था॥
पहलु-ए-यार में भी खुश नहीं होने देगी।
इतनी ज़ालिम है मशिय्यत,[5] मुझे मालूम न था॥

◇ ◇ ◇

हंस रहे हैं शबे-वादा[6] वो मकां में अपने।
हम इधर ऐश का सामान किये बैठे हैं॥

◇ ◇ ◇

कहते हो 'ग़म से परेशान हुए जाते हैं'।
ये नहीं कहते कि इन्सान हुए जाते हैं॥

◇ ◇ ◇

कोई हद ही नहीं इस एहतरामे-आदमियत की[7]।
बदी[8] करता है दुश्मन और हम शरमाये जाते हैं॥

◇ ◇ ◇

---

१. संसार वाले २. भौतिक प्रेम ३. बिल्कुल वास्तविकता ४. कोने ५. दैवेच्छा ६. वादे की रात को ७. मानव सम्मान की ८. दुष्टता

आई वो और मैं न था मौजूद ।
यूँ दुआयें क़बूल होती हैं ॥

◇ ◇ ◇

दिल के लिए शरारे-जहन्नुम[1] से कम नहीं ।
वो हरफ़े-आरजू[2] जो ज़बां से अदा न हो ॥

◇ ◇ ◇

ातारा-ए-सुबह की[3] रसीली झपकती आँखों में हैं फ़साने[4] ,
ागारे-महताब[5] की नशीली निगाह जादू जगा रही है ।
ली पे बेले की किस अदा से पड़ा है शबनम का एक मोती,
हीं, ये हीरे की कील पहने कोई परी मुस्करा रही है ।
लूका पहने हुए गुलाबी हर इक सुबक[6] पंखड़ी खड़ी है,
ी हुई सुर्ख ओढ़नी का हवा में पल्लू सुखा रही है ।

---

१. नरक की आग २. आकांक्षा ३. सुबह के सितारे की कहानियां ५. चांद की प्रतिमा ६. कोमल

दुनिया में आग लगी है

मौजे-हवा के[1] अन्दर शोला भड़क रहा है,
गर्मी की दोपहर है, सूरज दहक रहा है।
तपती हुई ज़मीं से आंचें निकल रही हैं,
पत्थर सुलग रहे हैं, कानें पिघल रही हैं।
हर क़ल्ब[2] फुंक रहा है, तहख़ाना चाहता है,
पर्दे में लू के गोया आलम[3] कराहता है।
लौ दे रहे हैं कांटे और फूल कांपते हैं,
तायर[4] सूक़ूत[5] में हैं, चौपाये हाँपते हैं।
क्यों जिस्मे-नाज़नीं[6] को लू में जला रहे हो ?
रूमाल मुँह पै डाले किस सिम्त[7] जा रहे हो ?
वक़्ते-जलाल[8] अपनी शाने-अताब[9] पर है,
ठहरो, कि दोपहर की गर्मी शबाब[10] पर है।
देखो ये मेरा मसकिन[11] किस दर्जा पुरफ़ज़ा[12] है,
साया भी है मयस्सर दरिया भी बह रहा है।
पानी है सर्दो-शीरीं[13] खुनकी[14] भी दिलनशीं है,
नज़दीक, दूर, कोई ऐसी जगह नहीं है।
दुखते हुए जिगर की हालत दिखाऊँ तुमको।
ठहरो तो बांसुरी पर आहें सुनाऊँ तुमको ॥

---

१. हवा की लहरों के २. हृदय ३. संसार ४. पक्षी ५. मौनावस्
६. सुन्दर शरीर ७. ओर ८. तेज का समय ९. प्रकोप की श
१०. यौवन ११. निवास-स्थान १२. आनन्ददायक १३. ठंडा मी
१४. शीतलता

बनवासी बाबू

जंगल के सर्द गोशे[1] , रेल बल खाती हुई ।
जुहल[2] के सीने पै जुल्फे-इल्म[3] लहराती हुई ।।

बज़्मे-वहशत में[4] तमद्दुन[5] नाज़ फ़रमाता हुआ ।
तुन्द[6] ऐंजिन का धुआं मैदां पे बल खाता हुआ ।।

फूल घबराये हुए-से पत्तियाँ डरती हुई ।
गर्म पुरज़ों की सदायें[7] शोख़ियां करती हुई ।।

एक इसटेशन फ़सुर्दा[8] मुज़महिल,[9] तनहा, उदास ।
झुटपुटे की बदलियां, पुरहौल[10] जंगल आस-पास ।।

मलगजी[11] नाले, अंधेरी वादियां, हल्की फुवार ।
बन के गिर्दो-पेश कोसों तक खजूरों की क़तार ।।

क़द्दे-आदम[12] घास, गहरी नद्दियाँ, ऊँचे पहाड़ ।
एक इस्टेशन फ़क़त ले दे के बाक़ी सब उजाड़ ।।

काश जाकर बाबुओं से 'जोश' ये पूछे कोई ।
जंगलों में कट रही है किस तरह से ज़िंदगी ?

सच कहो, उठते हैं बादल जब अंधेरी रात में ।
जब पपीहा कूक उठता है भरी बरसात में ।।

१. शीतल स्थान २. मूढ़ता ३. ज्ञान रूपी केश ४. दीवानगी के दरबार में ५. संस्कृति ६. तीव्र गति से चलने वाले ७. आवाजें ८, ९. मलीन, खिन्न १०. भयानक ११. मैले १२. आदमी के कद इतनी ऊंची

शब को होता है घने जंगल में जब बारिश का शोर।
साइयां[1] भीगी हुई रातों में जब करता है शोर॥
रूह तो उस वक़्त फ़र्ते-ग़म से[2] घबराती नहीं?
तुम को अपने अहदे-माज़ी की[3] तो याद आती नहीं?

१. सिंह २. ग़म की अधिकता से ३. बीते दिनों की

सांस लो या खुश रहो

क़सम उस मौत की उठती जवानी में जो आती है,
उरूसे-नौ[1] को बेवा, मां को दीवाना बनाती है।
जहां से झुटपुटे के वक़्त इक ताबूत[2] निकला हो,
क़सम उस शव[3] की जो पहले पहल उस घर में आती है।
अज़ीज़ों की निगाहें ढूंढ़ती हैं मरने वालों को,
क़सम उस सुबह की जो ग़म का ये मंज़र[4] दिखाती है।
क़सम साइल[5] के उस अहसास[6] की जब देख कर उसको,
सियाही दफ़अतन[7] कंजूस के माथे पे आती है।
क़सम उन आंसुओं की मां की आंखों से जो बहते हैं,
जिगर थामे हुए जब लाश पर बेटे की आती है।
क़सम उस बेबसी की अपने शौहर के जनाज़े पर,
कलेजा थाम कर जब ताज़ा दुल्हन सर झुकाती है।
नज़र पड़ते ही इक ज़ीमर्तबा[8] मेहमां के चेहरे पर,
क़सम उस शर्म की मुफ़लिस[9] की आंखों में जो आती है।
कि ये दुनिया सरासर ख़्वाब और ख़्वाबे-परीशां[10] है।
'खुशी' आती नहीं सीने में जब तक 'सांस' आती है॥

---

१. नई दुल्हन २. अर्थी ३. रात ४. दृश्य ५. भिक्षु ६. अनुभूति ७. एकाएक ८. भद्र (समृद्ध) ९. निर्धन १०. बिखरा स्वप्न

इतिक़ा*

रंगो-बू का ये सितारा[1] जिसमें है ये रेल-पेल।
ज़िंदगी का जिसमें खेला जा रहा है कब से खेल॥
ये कुर्रह[2] ये आबो-गिल[3] की कारगाहे-हस्तो-बूद[4]।
क़ब्ल-अज़-पैदायशे-तारीख़[5] है जिसका वजूद॥
रक़्स[6] में कब से है ये रक़्क़ासा-ए-जादू-अदा[7]।
ज़हन[8] में आता नहीं अंदाज़ा माहो-साल का[9]॥
उम्र क्या है इस तमाशागाहे-अब्रो-बाद[10] की,
ग़ौर करते वक़्त रुक जाती है सांस ऐदाद की[11]॥

◇ ◇ ◇

सब्र लेकिन मुद्दतों के बाद काम आ ही गया।
तीरह-शब[12] को रोज़े-रोशन[13] का पयाम आ ही गया॥
मुज़्दहे-हस्ती[14] लिये मौजे-सबा[15] आने लगी।
कुलज़मों ने[16] अरग़नूं[17] छेड़ा ज़मीं गाने लगी॥

---

* विकास

१. रंग तथा सुगंधि का नक्षत्र (संसार) २. मंडल ३. पानी मिट्टी ४. है और नहीं है का कार्यस्थल ५. इतिहास की सृष्टि से पूर्व ६. नृत्य ७. जादूभरी अदाओं वाली नर्तकी ८. मस्तिष्क ९. महीनों-वर्षों (समय) का १०. बादल और वायु का तमाशा-घर ११. गणना (आंकड़ों) की १२. अन्धेरी रात १३. उज्ज्वल दिन १४. अस्तित्व की मंगल सूचना १५. प्रभात समीर की लहर १६. सागरों ने १७. एक प्रकार का बाजा (संगीत)

और फिर इक दिलफ़रेबो-दिलनशीं[1] अंदाज़ से।
ख़ाक से पौदों ने सर अपने निकाले नाज़ से॥

और फिर सब्ज़े[2] की जुंबिश से ज़मीं लहरा गई।
इस सितारे की मसें भीगीं जवानी आगई॥

और फिर कुछ थम के उट्ठी एक मौजे-सरखुशी[3]।
कुलज़मों में ज़िंदगी की अव्वलीं[4] जुंबिश हुई॥

ख़ाक ने अंगड़ाई लेकर अपने जूड़े को छूआ।
आई सतहे-बहर से[5] मेलादख़्वानी की सदा[6]॥

कोंपलें बन-बन के फूटे ख़ाकदां[7] के वलवले।
मछलियों की शक्ल में उभरे इरादे बहर[8] के॥

काह[9] की नब्ज़ें भी ज़ोरे-कहकशां[10] चलने लगीं।
पानियों पर सांस लेती कश्तियां चलने लगीं॥

दहर[11] के तारीक गोशे[12] तक मुनव्वर[13] होगये।
ज़िंदगी की सांस से झोंके मुअत्तर[14] होगये॥

ज़िंदगी क्या दौलते-बेदार[15] इदराको-हवास[16]।
ज़िंदगी आवाज़, इशारा, गीत, आगाही[17], क़यास[18]॥

१. हृदय प्रवंचक तथा हृदयस्पर्शी २. हरियाली ३. नशे के सरूर की लहर ४. पहली ५. सागर के स्तर से ६. जन्म के समय गाये जाने वाले गीतों की आवाज़ ७. धरती ८. सागर ९. घास १०. आकाश-गंगा के नीचे ११. संसार १२. अन्धेरे कोने १३. आलोकित १४. सुगंधित १५. जागरूक सम्पत्ति १६. ज्ञान और अनुभूति १७. ज्ञान १८. अनुमान

इस सितारे की उमंगों की रवानी ज़िंदगी।
तुंदो-तूफ़ानी अनासर[1] की जवानी ज़िंदगी॥
मुंतशिर तारीख़े-दुनिया[2] की मुअल्लिफ़[3] ज़िंदगी।
दीन के रंगीं सहायफ़ की[4] मुसन्निफ़[5] ज़िंदगी॥

◇ ◇ ◇

सोच तो किस मंज़िले-तूफ़ां से आई है हयात[6]।
कितनी मौतों को कुचल कर मुस्कराई है हयात॥
इब्तिदाई[7] मंज़िलों की बे-परो-बाली[8] को देख।
क़हर-अफ़गन माद्दे[9] की हिम्मते-आली[10] को देख॥

---

१. तत्वों २. अस्तव्यस्त विश्व-इतिहास ३. संग्रहकर्ता ४. धर्म सम्बन्धी ग्रंथों की ५. रचयिता ६. जीवन ७. प्रारम्भिक ८. जब न पंख थे न बाल ९. भयंकर (अत्यन्त शक्तिशाली) तत्व १०. महान साहस

बेचारगी

खमोशी का समां है और मैं हूँ।
दयारे-खुफ्तगां[1] है और मैं हूँ॥

कभी खुद को भी इन्सां काश समझे।
ये सई-ए-रायगां[2] है और मैं हूँ॥

कहूँ किससे कि इस जमहूरियत में।
हुजूमे-खुसरवां[3] है और मैं हूँ॥

पड़ा हूँ इक तरफ़ धूनी रमाये।
अताबे-रहरवां[4] है और में हूँ॥

कहां हैं हमज़बां[5] अल्लाह जाने।
फ़क़त[6] मेरी ज़बां है और मैं हूं॥

खमोशी है ज़मीं से आस्मां तक।
किसी की दास्तां है और मैं हूँ॥

क़यामत है खुद अपने आशियां[7] में।
तलाशे-आशियां है और मैं हूँ॥

जहाँ इक जुर्म है यादे-बहारां[8]।
वो लाफ़ानी खिज़ां[9] है और मैं हूँ॥

---

१. सोये हुओं का देश २. व्यर्थ प्रयत्न ३. बादशाहों का समूह ४. राहियों का प्रकोप ५. सह-भाषी ६. केवल ७. नीड़ ८. वसन्त ऋतु को याद करना ९. स्थायी पतझड़

तरसती हैं ख़रीदारों को आंखें।
जवाहिर[1] की दुकां है और मैं हूं॥
नहीं आती अब आवाज़े-जरस[2] भी।
गुबारे-कारवां[3] है और मैं हूं॥
मआ़ले-बन्दगी[4] ऐ 'जोश' तौबा।
खुदा-ए-मेहरबां[5] है और मैं हूं॥

---

१. हीरों २. घंटियों की आवाज़ ३. कारवान गुज़रने के बाद की छाई हुई धूल ४. उपासना का फल ५. कृपालु ईश्वर

शानदार दावे

क़रनों के[1] शानदार ये दावे कि ज़िन्दगी।
इक मेहरे-लायज़ाल[2] से पाती है रोशनी ॥

नूर-ए-उलूमो-चश्मा-ए-हिकमत[3] है ज़िन्दगी।
इन्साफ़ो-अदलो-राफ़तो-रहमत[4] है ज़िन्दगी ॥

हर इक शिकम[5] है रिज़्क़[6] का वादा लिए हुए।
हर वादा है फ़राग़ते-ईफ़ा[7] लिए हुए ॥

दुनिया नहीं बहिश्त है, दारुस्सलाम[8] है।
इक रहमते-तमाम[9] है इक फ़ैज़े-आम[10] है ॥

तक़दीर का ग़लत है कि हेटा है आदमी।
कुदरत[11] शफ़ीक़ बाप है, बेटा है आदमी।

पल भर भी चश्मे-दहर[12] में होती है जब खटक।
दिल मीरे-ज़िंदगी [13]का धड़कता है देर तक ॥

इन्सानियत का दर्द है कुदरत लिए हुए।
शायर का इश्क़, मां की मुहब्बत लिए हुए ॥

१. शताब्दियों के २. अविनाशी सूर्य ३. ज्ञानगंगा और दर्शन का स्रोत ४. न्याय, कृपा, अनुकम्पा आदि ५. पेट ६. रोटी ७. पूर्ण करने का अवकाश ८. पवित्र स्थान (स्वर्ग) ९, १०. प्रत्येक प्राणी के लिए दया, अनुकम्पा ११. प्रकृति १२. विश्व-नेत्र १३. जीवन के सरदार (ईश्वर)

इशरत[1] की धूम-धाम है मस्ती की रेल पेल।
हस्ती[2] का कारखाना है इक मुश्फ़िक़ाना[3] खेल॥
पीरे-मुग़ां[4] के फ़ैज़[5] से छलके हुए हैं जाम।
ज़र्रों के दिल में नस्ब[6] हैं खुरशीद के खयाम[7]॥
अलमुख़्तसर[8] तमाम ये दावे कि आस्मां।
रौंदी हुई ज़मीं पे अज़ल[9] से है मेहरबां॥
झुटला दिया है इनको ग़मे-कायनात ने[10]।
इन सब के मुंह पे थूक दिया है हयात[11] ने॥

---

१. सुख वैभव २. अस्तित्व ३. स्नेहपूर्ण ४. अग्नि पूजने वालों के सरदार (साक़ी) ५. कृपा ६. गड़े हुए ७. सूरज के खेमे ८. संक्षेप में यह कि ९. अनादि काल १०. संसार के दुखों ने ११. जीवन

'हूँ'

जब कि बच्चे ख़्वाब के हंगाम[1] थे गर्मे-ख़रोश[2] ।
बाप की सिर्फ़ एक 'हूँ' ने कर दिया सबको ख़मोश ॥
'हूँ' बुजुर्गे-ख़ानदां की[3] आहनी[4] दीवार है ।
हर फ़साद और ग़ुलग़ुले को एक 'हूँ' दरकार है ॥
सुनते हैं इन्सान का है बाप रब्बे-कायनात[5] ।
इस लिए ऐ दोस्त तुझ से पूछता हूँ एक बात ॥
जब 'हलाकू' ने बहाई थीं लहू की नद्दियां ।
कोई 'हूं' उस वक्त क्या गूंजी थी ज़ेरे-आस्मां[6] ?
तोहफ़तन[7] आये थे जब मक़तूल[8] इन्सानों के सर ।
फट पड़ी थी क्या कोई 'हूँ' ख़ैमा-ए-चंगेज़ पर[9] ?
शोला-हाए[10] हुक्मे-नीरो[11] जब कि थे भड़के हुए ।
डांट की कोई सदा[12] आई थी बामे-अर्श[13] से ?
ले उड़ा था जबकि रावन एक देवता का गुहर[14] ।
कोई 'हूँ' गरजी थी क्या उस वक्त ओजे-चर्ख़ पर[15] ?

---

१. सोने के समय २. शोर मचा रहे थे ३. परिवार के बुजुर्ग की ४. लोहे ५. ब्रह्माण्ड का स्वामी ६. आकाश के नीचे ७. उपहार स्वरूप ८. कत्ल किये हुए ९. चंगेज़ के ख़ैमे पर १०. शोले ११. रोम का एक बादशाह, जो उस समय भी बांसुरी बजाता रहा जब सारा रोम जल रहा था १२. आवाज़ १३. आकाश १४. मोती १५. आकाश पर

जब बहा था करबला की ख़ाक पर दरिया-ए-ख़ूं[1] ।
दहर[2] पर नाज़िल[3] हुई थी कोई हैबतनाक[4] 'हूँ' ?
कर रहा था ज़हर जब सुक़रात के दिल पर असर ।
अर्श से उतरी थी कोई 'हूँ' बिसाते फ़र्श पर[5] ?
ईसा-ए-मरियम को जब खेंचा गया था दार पर[6] ।
हो गई थी क्या किसी 'हूँ' से ज़मीं ज़ेरो-ज़बर[7] ?
ऐटम ने रख दिया था भून कर जब इक शहर ।
कुलज़मे-तनबीह में[8] आई थी क्या कोई लहर ?
बस्तियां ग़लतीदा थीं[9] जब खून के गिरदाब[10] में ।
कोई 'हूँ' गरजी थी क्या बंगाला-ओ-पंजाब में ?
जब हुए थे आख़री अवतार गांधी जी हलाक ।
आई थी उस वक्त क्या कोई सदा-ए-हौलनाक[11] ?
इतनी चुप साधे हुए है किस लिए अर्शे-बरीं[12] ।
क्यों हमारा आस्मानी बाप 'हूँ' करता नहीं ?

---

१. खून की नदी २. संसार ३. अवतीर्ण ४. भयंकर ५. धरती पर ६. फांसी पर ७. उलट-पुलट ८. चेतावनी के सागर में (ईश्वर) ९. लोट रही थीं १०. भंवर ११. भयंकर आवाज़ १२. सब से ऊंचा आकाश जहाँ भगवान रहता है

निज़ामे-नौ*

खेल हां ऐ नौ-ए-इन्सां[1] इन सियह रातों से खेल।
आज अगर तू जुलमतों में[2] पा-ब-जौलां[3] है तो क्या॥

मुस्कराने के लिए बेचैन है सुबहे-वतन।
और चंदे[4] ज़ुल्मते-शामे-ग़रीबां[5] है तो क्या॥

ख़त्म हो जायेगा कल ये नारवां[6] पस्तो-बुलंद[7]।
आज नाहमवार[8] सतहे-बज़्मे-इमकां[9] है तो क्या॥

मुट्ठियों में भर के अफ़शां[10] चल चुका है इंक़िलाब।
अब्रे-ग़म[11] जुल्फ़े-जहाँ पर[12] बाले-जुंबां[13] है तो क्या॥

कल जवाहिर से[14] गिरां होगी[15] लहू की बूंद बूंद।
आज अपना खून पानी से भी अरज़ां[16] है तो क्या॥

आ रही है आग लंका की तरफ़ बढ़ती हुई।
आज रावन का महल सीता का ज़िंदां[17] है तो क्या॥

हो रहा है तबअ[18] फ़र्माने-हयाते-जाविदां[19]।
मौत अगर अब तक रगे-जां[20] पर ख़रामां[21] है तो क्या॥

---

* नव व्यवस्था

१. मनुष्य २. अन्धेरों में ३. पांव में बेड़ी पड़ी हुई ४. थोड़ी देर ५. मुसीबत की शाम का अंधेरा ६. अनुचित ७. ऊँचा-नीचा ८. असमतल ९. संभावनाओं का स्तर १०. चमकीला पिष्ट ११. ग़म का बादल १२. संसार के केशों पर १३. गतिशील १४. हीरों से १५. महंगी होगी १६. सस्ता १७. कारागार १८. छप रहा है १९. अमर जीवन का आज्ञापत्र २०. शह-रग २१. विचरित

जानवर का जानवर भी कल न होगा मुद्दई[1] ।
आज अगर इन्सान का इन्सान दुश्मन है तो क्या ।।
'जोश' के अफ़कार को[2] मानेगो मुस्तक़बिल की रूह ।
आज अगर रुसवा ये मर्दे-नामुसलमां है[3] तो क्या ।।

---

१. शत्रु २. विचारों, रचनाओं को ३. जो मुसलमान नहीं है (विश्वास का पात्र नहीं)

इन्सानियत का कोरस

बढ़े चलो, बढ़े चलो, रवां-दवां बढ़े चलो।
बहादुरो वो ख़म हुईं[1] बुलंदियां बढ़े चलो,
पये-सलाम[2] झुक चला वो आस्मां बढ़े चलो,
फ़लक[3] के उठ खड़े हुए वो पासबां[4] बढ़े चलो,
ये माह[5] है वो मेहर[6] है ये कहकशां[7] बढ़े चलो,
लिये हुए ज़मीन को कशां-कशां[8] बढ़े चलो।
रवां-दवां बढ़े चलो, रवां-दवां बढ़े चलो॥

अभी निशां मिला नहीं है मंज़िले-निजात का[9],
अभी तो दिन के वलवले में वसवसा[10] है रात का,
अभी लिया नहीं है दिल ने जायज़ा[11] हयात[12] का,
अभी पता चला नहीं है सिर्रे-कायनात का[13],
अभी नज़र नहीं हुई है राज़दां, बढ़े चलो।
रवां-दवां बढ़े चलो, रवां-दवां बढ़े चलो॥

तुम्हारी जुस्तजू में हैं रवां जहांपनाहियां[14],
फ़लक की शहरयारियां[15], ज़मीं की कजकुलाहियां[16],

१. झुकी २. सलाम के लिए ३. आकाश ४. रक्षक ५. चांद ६. सूरज ७. आकाश-गंगा ८. खेंचते हुए ९. मुक्ति की मंज़िल का १०. भय ११. संपरीक्षण १२. जीवन १३. ब्रह्माण्ड के भेदों का १४, १५. १६, बादशाहतें

तुम, और बिसाते-बेदिली पे[1] दिलशिकन[2] जमाहियां,
हर इक क़दम पे हैं तो हों तबाहियां सियाहियां,
तबाहियों, सियाहियों के दर्मियां बढ़े चलो।
रवां-दवां बढ़े चलो, रवां-दवां बढ़े चलो॥

क़रीबे-ख़त्म रात है, रवां-दवां सियाहियां,
सफ़ीना-हाए-रंगो-बू के[3] खुल रहे हैं बादबां,
फ़लक धुला-धुला सा है ज़मीन है धुआं-धुआं,
उफ़क़[4] की नर्म सांवली सियाहियों के दर्मियां,
मचल रही हैं ज़रनिगार[5] सुर्खियां[6] बढ़े चलो।
रवां-दवां बढ़े चलो, रवां-दवां बढ़े चलो॥

१. बेदिली के बिस्तर पर २. हृदयभंजक ३. रंग तथा सुगधि की नौकाओं (संसार) के ४. क्षितिज ५. स्वर्णिम ६. लालिमाएँ

बुलंदबीनी*

कहां तसव्वुरे-पस्ती[1] बुलंदबीनों को ।
हम आस्मान से लाते नहीं ज़मीनों को ।।
हमें डराएगा क्या खाक बहरे-तूफ़ांखेज़[2] ।
कि हमने सैल[3] बनाया है खुद सफ़ीनों को[4] ।।
किसी के दर पे[5] झुकाते नहीं जो सर अपना ।
उन्हें ये हक़ है चलें तानकर वो सीनों को ।।
मेरी निगाह में हैं नाकारह[6] वो सुबक फ़नकार[7] ।
हसीनतर जो बनाते नहीं हसीनों को ।।
लगाओ बढ़ के अनासिर के[8] मुँह में जल्द लगाम ।
कि इनकी पुश्त पे[9] मैं कस चुका हूँ ज़ीनों को ।।
क़दीम[10] काबा-ओ-काशी के हाजिबो[11] हुशियार ।
मुक़ामे-कुफ्र से[12] ललकारता हूँ दीनों को[13] ।।
बशर[14] के ज़हन[15] पे क़रनों से[16] जो मुसल्लत[17] हैं ।
बदल रहा हूँ गुमानों में[18] उन यक़ीनों को[19] ।।
कल उनकी नस्ल का ऐ 'जोश' मैं बनूंगा इमाम[20] ।
खबर करो मेरे मसलक[21] के नुकता-चीनों को[22] ।।

---

* उच्च-दृष्टि

१. अधःस्थल की कल्पना २. प्रचण्ड सागर ३. बाढ़ ४. नावों को ५. दरवाज़े (दहलीज) पर ६. अयोग्य ७. तुच्छ कलाकार ८. तत्वों के ९. पीठ पर १०. प्राचीन ११. देख-रेख करने वालो १२. नास्तिकता के स्थान से १३. धर्मों को १४. मनुष्य १५. मस्तिष्क १६. शताब्दियों से १७. सवार १८. भ्रमों में १९. विश्वासों को २०. नेता २१. मत २२. आलोचकों को

ऐतराफ़े-अज्ज*

लोग कहते हैं कि मैं हूँ शायरे-जादूबयां[1] ।
सदरे-माना[2] , दावरे-अलफ़ाज़[3] , अमीरे-शायरां[4] ।।
और खुद मेरा भी कल तक, ख़ैर से, था ये ख़याल ।
शायरी के फ़न[5] में हूँ मिनजुमला-ए-अहले-कमाल[6] ।।
लेकिन अब आई है जब इकगोना[7] मुझ में पुख़्तगी[8] ।
ज़हन[9] के आईने पर कांपा है अक्से-आगही[10] ।।
आस्मां जागा है सर में और सीने में ज़मीं ।
अब मुझे महसूस होता है कि मैं कुछ भी नहीं ।।
जिहल[11] की मंज़िल में था मुझको ग़रूरे-आगही[12] ।
इतनी लामहदूद[13] दुनिया और मेरी शायरी ।।
ज़ुल्फ़े-हस्ती[14] और इतने बेनिहायत[15] पेचो-ख़म[16] ।
उड़ गया रंगे-तअ़ल्ली[17] खुल गया अपना भरम ।।

---

* अपनी हीनता मानना

१. वर्णन में जादू का सा प्रभाव रखने वाला कवि २. अर्थपूर्ण बात कहने वालों का नेता ३. शब्दों का न्यायाधीश ४. कवियों का सरदार ५. कला ६. अत्यन्त प्रतिभाशाली कवियों में से ७. जरा-सी ८. प्रौढ़ता ९. मस्तिष्क १०. बुद्धि का प्रतिबिम्ब ११. मूढ़ता १२. बुद्धिमान होने का घमंड १३. असीम १४. ब्रह्माण्ड-रूपी केश १५. असंख्य १६. पेच (उलझाव) १७. शेखी का रंग

मेरे शेरों में फ़क़त इक तायराना[1] रंग है ।
कुछ सियासी रंग है, कुछ आशिक़ाना रंग है ॥
कुछ मनाज़िर[2] कुछ मबाहिस[3] कुछ मसायल[4] कुछ ख़याल ।
इक उचटता सा जमाल[5] इक सरबज़ानू[6] सा ख़याल ॥
मेरे क़सरे-शेर में[7] ग़ोग़ाये[8] - फ़िक्रे-नातमाम[9] ।
एक दर्दअंगेज़[10] दरमां[11] इक शिकस्त-आमादा[12] जाम[13] ॥
गाह[14] सोज़े-चश्मो-अबरू[15] गाह सोज़े-नाओनोश[16] ।
गाह ख़लवत[17] की ख़मोशी गाह जलवत[18] का ख़रोश[19] ॥
चहचहे कुछ मौसमों के, ज़मज़मे[20] कुछ जाम के ।
दैरे-दिल[21] में चंद मुखड़े मरमरीं-असनाम[22] के ॥
चंद जुलफ़ों की सियाही, चंद रुख़सारों की[23] आब ।
गाह हरफ़े-बेनवाई[24] गाह शोरे-इंक़िलाब ॥
गाह मरने के अज़ायम[25] गाह जीने की उमंग ।
बस यही सतही[26] सी बातें, बस यही ओछे से रंग ॥

१. छिछला (ऊपरी) २. दृश्य ३. तर्क ४. समस्याएँ ५. सौन्दर्य ६. घुटनों पर झुका हुआ (तुच्छ) ७. शेरों के महल में ८. कोलाहल ९. अपूर्ण चिन्तन १०. हृदय-विदारक ११. चिकित्सा १२. टूटने को तैयार १३. प्याला १४. कभी (कहीं) १५. नयन तथा भृकुटी की चिन्ता १६. खाने-पीने आदि की चिन्ता १७. एकांत १८. प्रत्यक्ष १९. कलरव २०. गान २१. हृदय-मंदिर २२. मरमर की बनी हुई मूर्तियां (अतिसुन्दर नारियां) २३. कपोलों की २४. निर्धनता की चर्चा २५. संकल्प २६. छिछली

बेख़बर था मैं कि दुनिया राज़-अंदर-राज़[1] है।
वो भी गहरी ख़ामशी है जिसका नाम आवाज़ है॥

ये सुहाना बोसतां[2] सर्वो-गुलो-शमशाद[3] का।
एक पल भर का खिलंडरापन है अबरो-बाद का[4] ॥

इब्तिदा-ओ-इंतिहा[5] का इल्म नज़रों से निहां[6]।
टिमटिमाता सा दिया, दो ज़ुल्मतों के[7] दर्मियां॥

अंजुमन[8] में तख़लिये[9] हैं, तख़लियों में अंजुमन।
हर शिकन[10]में इक खिचावट, हर खिचावट में शिकन॥

हर गुमां[11] में इक यक़ीं-सा हर यक़ीं में सौ गुमां।
नाखुने-तदबीर[12] भी खुद एक गुत्थी बेग्रमां[13]॥

एक-एक गोशे से[14] पैदा वुसग्रते-कौनो-मकां[15]।
एक-एक ख़ोशे[16] में पिनहां[17] सद बहारे-जाविदां[18] ॥

बर्क़[19] की लहरों की वुसग्रत[20]ग्रलहफ़ीज़ो-ग्रलग्रमां[21]।
ग्रौर मैं सिर्फ़ एक कौंदे की लपक का राज़दां[22] ॥

राज़दां क्या, मदहख़्वां[23]ग्रौर मदहख़्वां भी कमसवाद[24]।
नाबलद[25], नादान, नावाक़िफ़, नदीदह[26], नामुराद॥

१. भेद के भीतर भेद २. फुलवाड़ी ३. सुन्दर वृक्षो ग्रौर फूलों ४. वर्षा तथा वायु का ५. ग्रादि तथा ग्रन्त ६. निहित ७. दो लोकों के ग्रन्धकार के ८. सभा ९. एकांत १०. वलि ११. भ्रम १२. विधि का नाखून १३. ग्रथाह १४. कोने से १५. ब्रह्माण्ड की-सी विशालता १६. बाल १७. निहित १८. सैकड़ों सतत बसन्त ऋतुएं १९. बिजली २०. विशालता २१. खुदा की पनाह २२. भेदी २३. गुणगायक २४. तुच्छ २५. ग्रनभिज्ञ २६. ग्रन्धा

क्यों न फिर समझूँ सुबक[1] अपने सुखन[2] के रङ्ग को।
नुत्क़[3] ने अलमास[4] के बदले तराशा संग[5] को॥

लैला-ए-आफ़ाक़[6] उलटती ही रही पैहम[7] नक़ाब।
और यहां औरत, मनाज़िर[8], इश्क़, सहबा[9], इंक़िलाब॥

पा रहा हूं शायद अब इस तीरह-हल्क़े से[10] नजात[11]।
क्योंकि अब पेशे-नज़र[12] हैं उक़्दाहाये-कायनात[13]॥

ये भिंची, उलझी ज़मीं, ये पेच-दर-पेच आस्मां।
अलअमानो-अलअमानो-अलअमानो-अलअमां[14]॥

इक नफ़स[15] का तार और ये शोरे-उम्रे-जाविदां[16]।
इक कड़ी और उस में ज़ंजीरों के इतने कारवां॥

एक-एक लम्हे में इतने कारवाने-इंक़िलाब।
एक-एक ज़र्रे में इतने माहताबो-आफ़ताब[17]॥

इक सदा[18] और उसमें ये लाखों हवाई दायरे।
जिसके शोबों को[19] अगर चुन ले तो दुनिया गूंज उठे॥

एक बूंद और हफ़्त-क़ुलज़म[20] के हिला देने का जोश।
एक गूंगा ख़्वाब और ताबीर[21] का इतना ख़रोश[22]।

१. हल्का २. शायरी ३. वाक्शक्ति ४. हीरे ५. पत्थर ६. संसार रूपी रात ७. निरंतर ८. दृश्य ९. शराब १०. अन्धेरे क्षेत्र से ११. मुक्ति १२. नज़र के सामने १३. ब्रह्माण्ड के गूढ़ रहस्य १४. खुदा की पनाह १५. श्वास १६. अमर जीवन का शोर १७. चांद सूरज १८. आवाज १९. टुकड़ों को २०. सप्त सागर २१. स्वप्न-फल २२. शोर

इक कली और उसमें सदियों की मता-ए-रंगो-बू[1] ।
सिर्फ़ इक लम्हे[2] की रग में और क़रनों का[3] लहू ।।
हर क़दम पर नसब[4] और असरार के[5] इतने ख़याम[6] ।
और इस मंज़िल में मेरी शायरी मेरा कलाम ।।
जिस में राज़े-आसमां है और न असरारे-ज़मीं ।
एक ख़स[7] , इक दाना, इक जौ, एक ज़र्रा भी नहीं ।।
नौ-ए-इन्सानी[8] को जब मिल जाएगी रफ़्तारे-नूर[9] ।
शायरे-आज़म[10] का तब होगा कहीं जाकर ज़हूर[11] ।
ख़ाक से फूटेगी जब उम्रे-अबद[12] की रोशनी ।
झाड़ देगी मौत को दामन[13] से जिस दिन ज़िंदगी ।।
जब हमारी जूतियों की गर्द होगी कहकशां[14] ।
तब जनेगी नस्ले-आदम[15] शायरे-जादूबयां ।।
फ़िक्र[16] में कामिल[17] न फ़न्ने-शेर[18] में यकता[19] हूँ मैं ।
कुछ अगर हूँ तो नक़ीबे-शायरे-फ़र्दा[20] हूँ मैं ।।

---

१. सुगंधि तथा रंग की पूंजी २. क्षण ३. शताब्दियों का ४. गड़े हुए ५. रहस्यों के ६. खैमे ७. तिनका ८. मानव जाति ९. प्रकाश की सी तीव्र गति १०. महाकवि ११. प्रकटीकरण १२. स्थायी जीवन १३. पल्लू १४. आकाश-गंगा १५. मानव जाति १६. चिंतन १७. सिद्ध १८. काव्यकला १९. अद्वितीय २०. भविष्य के शायर का मागध

रुबाइयाँ

हर इल्मो-यक़ीं[1] है इक गुमां[2] ऐ साक़ी,
हर आन[3] है इक ख़्वाबे-गिरां[4] ऐ साक़ी,
अपने को कहीं रख के मैं भूला हूँ ज़रूर,
लेकिन ये नहीं याद कहाँ ऐ साक़ी।

◇ ◇ ◇

किस नहिज से[5] गरदनों के फंदे खोलें ?
किस बाट से दहर[6] के शदायद[7] तोलें ?
अपने अल्लाह से ये बातें पूछो,
क्या हम को ग़र्ज़ पड़ी है, हम क्यों बोलें ?

◇ ◇ ◇

क्यों मुझ से तक़ाज़ा है कि 'फंदे खोलो',
किस तरह कटे ये पाप, बोलो, बोलो,
बन्दे की तरफ़ शौक़ से आना यारो,
मायूस अल्लाह से तो पहले हो लो।

१. ज्ञान, विश्वास २. भ्रांति ३. प्रतिक्षण ४. गहरा स्वप्न
५. तरीके से ६. संसार ७. कठोरताएँ

बेचारा जिगर के ज़ख़्म धो लेता है,
सर बालिशे-ग़म पे[1] रख के सो लेता है,
जब राग सुने तो भेद दिल पर ये खुला,
दुखिया इन्सान यूं भी रो लेता है।

◇ ◇ ◇

इब्ने-आदम[2] को साहिबे-जाह करो,
कम्बख़्त को अब और न गुमराह करो,
'अल्लाह' से इन्सान है कब का वाक़िफ़,
इन्सान से इन्सान को आगाह करो।

◇ ◇ ◇

मिक़राज़[4] ख़ुद अपने को कतर जाती है,
जम जाती है लौ, आग ठिठर जाती है,
जितना भी उभारती है जिस चीज़ को अक़्ल,
उतना ही वो ग़ार में उतर जाती है।

◇ ◇ ◇

जो चीज़ इकहरी थी वो दोहरी निकली,
सुलझी हुई जो बात थी उलझी निकली,
सीपी तोड़ी तो उस से मोती निकला,
मोती तोड़ा तो उसमें सीपी निकली।

•

१. ग़म के तकिये पर २. मनुष्य ३. वैभवशाली ४. कैंची

करती है गुहर[१] को अश्कबारी[२] पैदा,
तमकीन[३] को मौजे-बेक़रारी[४] पैदा,
सौ बार चमन में जब तड़पती है नसीम[५],
होती है कली पर एक धारी पैदा।

◇ ◇ ◇

इक उम्र से ज़हर पी रहा हूँ ऐ दोस्त,
सीने के शिगाफ़[६] सी रहा हूँ ऐ दोस्त,
गोया सरे-कोहसार[७] तनहा पौदा,
यूँ अपने वतन में जी रहा हूं ऐ दोस्त।

◇ ◇ ◇

मर-मर के जब इक बला से पीछा छूटा,
इक आफ़ते-ताज़ादम ने[८] आकर लूटा,
इक आबला-ए-नौ से हुआ सीना दोचार[९],
जैसे ही पुराना कोई छाला टूटा।

◇ ◇ ◇

झिझको, ठिठको न एक पल भी शरमाओ,
ये दिल तो अज़ल[१०] ही से तुम्हारा है पड़ाओ,
ऐ जुमला[११] हवादिसो-ग़मूमो-आफ़ात[१२],
बन्दे ही का ये ग़रीबख़ाना[१३] है दर आओ[१४]।

१. मोती २. आंसुओं की वर्षा ३. उच्चस्थान ४. व्याकुलता की लहर ५. पवन ६. छिद्र ७. पर्वत के शिखर पर ८. नई मुसीबत ने ९. हृदय में नया छाला उत्पन्न हो गाया १०. आदिकाल ११. समस्त १२. चिंताओ, दुखो, मुसीबतो १३. घर १४. आजाओ

ये हुक्म है, चुप साध लो, आँखें न उठाओ,
दो खूब अज़ाँ, धूम से नाक़ूस[1] बजाओ,
गोबर पे चने चाब के पानी पीलो,
बिस्तर पे गिरो, डकार लो और मर जाओ।

◇ ◇ ◇

दायम[2] हरकत है ज़िन्दगी की दमसाज़[3],
लरज़ां[4] जो नशेब[5] है, तो ज़ुंबां[6] है फ़राज़[7],
मंज़िल पे कमर न खोल ऐ बंदा-ए-राह[8],
मंज़िल तो है इक ताज़ा सफ़र का आग़ाज़[9]।

◇ ◇ ◇

दुख शेर से बेहिसाब पाये मैंने,
हर सांस में सौ अज़ाब[10] पाये मैंने,
उगले जब बहरे-दिल[11] ने सौ लालो-गुहर[12],
तहसीन[13] के कुछ हुबाब[14] पाये मैंने।

◇ ◇ ◇

सर घूम रहा है नाव खेते-खेते,
अपने को फ़रेबे-ऐश देते देते,
उफ़ जहदे-हयात[15]! थक गया हूँ माबूद[16],
दम टूट चुका है सांस लेते लेते।

---

१. शंख २. स्थायी ३. मित्र ४. सक्रिय ५. तल ६. सक्रिय ७. ऊंचाई ८. राही ९. प्रारम्भ १०. कष्ट ११. हृदय-सागर १२. मोती १३. प्रशंसा १४. पानी के बुलबुले १५. जीवन-संग्राम १६. पूज्य (ईश्वर)

ये रात गये ऐने-तरब[1] के हंगाम[2],
परतौ[3] ये पड़ा पुश्त[4] से किस का सरे-जाम[5],
'ये कौन है ?' 'जबरील[6] हूँ' 'क्यों आये हो ?'
'सरकार ! फ़लक[7] के नाम कोई पैग़ाम ?'

◇ ◇ ◇

जुलफ़ें हैं कि ज़ोलीदा-ख़यालात की[8] रात,
ऐ जाने-हया[9] ! ठहर भी जा रात की रात,
इन तीरह[10] घटाओं में किधर जायेगी,
शानों पे[11] लिए हुए ये बरसात की रात।

◇ ◇ ◇

शबनम से न गुल[12] धुलें तो मेरा ज़िम्मा,
मोती न अगर रुलें तो मेरा ज़िम्मा,
इक दर[13] जो हुआ बंद तो आई ये सदा[14],
सौ दर न अगर खुलें तो मेरा ज़िम्मा।

◇ ◇ ◇

हर यारे-ज़फ़ाजू[15] को निबाहा मैंने,
समझा हर ज़ख़्मे-दिल[16] को फाहा मैंने,
लेकिन अपने से बढ़ के अब तक वल्लाह[17] !
दुनिया में किसी को नहीं चाहा मैंने।

---

१. अति आनन्द २. समय ३. प्रतिबिम्ब ४. पीछे ५ शराब के प्याले पर ६. एक फरिश्ता जो खुदा के आदेश पैगम्बरों तक पहुँचाता है। ७. आकाश (खुदा) ८. उलझे विचारों की ९. लज्जा की जान (लजीली प्रेयसी) १०. काली ११. कधों पर १२. फूल १३. दरवाज़ा १४. आवाज़ १५ कठोर मित्र १६. हृदय का घाव १७. ईश्वर की सौगंध, सच कहता हूँ।

शानों पे है छिटकी हुई ज़ुल्फ़ों की लटक,
ऐज़ा में[1] है ताज़ा शाखे-गुल[2] की सी लचक,
और उसमें ये अंगड़ाई का आलम कि न पूछ,
बिखरी हुई बदलियों में जिस तरह धुनक[3]।

◇ ◇ ◇

हुर सुबह है इक अजीब सौदा[4] मुझको,
हर शाम है इक-तरफ़ा तक़ाज़ा मुझको,
जुग बीत गया मगर ये अब तक न खुला,
आख़िर किस शै की है तमन्ना मुझको?

◇ ◇ ◇

जो दिल की है वो बात नहीं होती है,
जो दिन न हो वो रात नहीं होती है,
हस्ती[5] है वो तूफ़ान कि अक्सर 'जोश',
अपने से मुलाक़ात नहीं होती है।

◇ ◇ ◇

ऐ ख़्वाब बता, यही है बागे-रिज़्वां[6]?
हूरों का कहीं पता, न ग़िलमां का[7] निशां,
इक कुंज में ख़ामोशो-मलूलो-तनहा[8],
बेचारे टहल रहे हैं अल्लाह मियां।

१. अंगों में २. नई उगी हुई फूलों की डाली ३. इन्द्रधनुष ४. उन्माद ५. जीवन ६ जन्नत (स्वर्ग) ७. लौंडों का ८. मौन, उदास, अकेले

आजा, मरता हूँ ग़म के मारे आजा,
भीगी हुई रात के शरारे[1] आजा,
ऐ शाम का वादा करके जाने वाले,
अब डूब रहे हैं देख, तारे, आजा।

◇ ◇ ◇

देता नहीं बोस्तां[2] सहारा मुझको,
करती नहीं बुलबुल भी इशारा मुझको,
मुरझाए हुए फूल ने हसरत से कहा,
अब तोड़ के फेंक दो खुदा-रा[3] मुझको।

◇ ◇ ◇

नेकी की हमें राह बताते रहिये,
अल्लाह से हर आन[4] डराते रहिये,
पीने वालों को कहते रहिये बेदीन[5],
और शौक़ से माले-ग़ैर खाते रहिये।

◇ ◇ ◇

हर रंग में इबलीस[6] सज़ा देता है,
इन्सान को बहर-तौर[7] दग़ा देता है,
कर सकते नहीं गुनाह जो अहमक़ उनको,
बेरूह[8] नमाज़ों में लगा देता है।

---

१. चिंगारी २. बाग़ ३. भगवान के लिए ४. प्रतिक्षण (हर समय)
५. अधर्मी ६. शैतान ७. हर हाल में ८. निर्जीव (व्यर्थ की)

जन्नत के मज़ों पे जान देने वालो,
गंदे पानी में नाव खेने वालो,
हर ख़ैर[1] पे चाहते हो सत्तर हूरें,
ऐ अपने खुदा से सूद लेने वालो!

◇ ◇ ◇

तुझ से जो फिरेगी तो किधर जायेगी,
ले जायेगा जिस सिम्त[2] उधर जायेगी,
दुनियां के हवादिस से[3] न घबरा कि ये उम्र,
जिस तरह गुज़ारेगा, गुज़र जायेगी।

◇ ◇ ◇

गुलशन[4] की रविश[5] पे मुस्कराता हुआ चल,
बदमस्त घटा है, लड़खड़ाता हुआ चल,
कल ख़ाक में मिल जायेगा ये ज़ोरे-शबाब[6],
'जोश' आज तो बांकपन दिखाता हुआ चल।

◇ ◇ ◇

क़ानून नहीं है कोई फ़ितरत[7] के सिवा,
दुनिया नहीं कुछ नमूदे-ताक़त[8] के सिवा,
क़ुव्वत[9] हासिल कर और मौला[10] बन जा,
माबूद[11] नहीं है कोई क़ुव्वत के सिवा।

---

१. नेकी २. ओर ३. दुर्घटनाओं (झगड़ों) से ४. बाग ५. पगडंडी ६. यौवन का ज़ोर ७. प्रकृति ८. शक्ति-प्रदर्शन ९. शक्ति १०. भगवान ११. उपास्य (भगवान)

जीना है तो जीने की मुहब्बत में मरो,
ग़ारे-हस्ती को[1] नेस्त[2] हो हो के भरो,
नौ-ए-इन्सां[3] का दर्द अगर है दिल में,
अपने से बुलन्दतर[4] की तख़लीक़[5] करो।

◇ ◇ ◇

मख़लूक़[6] की ख़िदमत से बहुत डरता है,
अपने ही लिए आठ पहर मरता है,
अफ़सोस तेरा अना-ए-जामिद[7] ऐ शख़्स,
अपने से तजावज़[8] ही नहीं करता है।

◇ ◇ ◇

इस ज़ाहिरी सूरत पे ग़रीबों की न जाओ,
कर देंगे अमीरों का ये इक दिन सुथराओ,
दिल से जो टपकती हैं लहू की बूंदें,
हर बूंद में होता है समन्दर का डुबाओ।

◇ ◇ ◇

जिस चाल से बढ़ रही है फ़ौजे-बुरहान[9],
औहाम का[10] क़तअ[11] हो रहा है वीरान,
जितना इन्सान बन रहा है अल्लाह,
अल्लाह उतना ही बन रहा है इन्सान।

---

१. जीवन के गढ़े को २. नष्ट ३. मानव जाति ४. उच्चतर ५. रचना ६. मनुष्य ७. जड़ आत्म-प्रवंचना ८. उल्लंघन (ऊपर ही नहीं उठता) ९. तर्क की सेना (तर्क) १०. भ्रमों का ११. क्षेत्र

हर ग़ार[१] महो-साल से[२] पट जाता है,
साया हो कि धूप वक्त कट जाता है,
ग़म है मानिन्दे-बरफ़[३], ऐसा इक बोझ,
हर गाम[४] पे जिसका वज़न घट जाता है।

◇ ◇ ◇

ऐ उम्रे-रवां[५] की रात, आहिस्ता गुज़र,
ऐ मंज़रे-कायनात[६], आहिस्ता गुज़र,
इक शै पे भी जमने नहीं पाती है निगाह,
ऐ क़ाफ़िला-ए-हयात[७], आहिस्ता गुजर।

◇ ◇ ◇

हर ग़म मै-गुलरंग[८] से थर्राता है,
आलामे-जहां का[९] मुंह उतर जाता है,
लेकिन जिसे कहते हैं ग़मे-इश्क़ ऐ 'जोश',
वो नशे में कुछ और भी बढ़ जाता है।

◇ ◇ ◇

ये सिलसिला-ए-लाइन्तनाही[१०] है कि ज़ुल्फ़[११],
गहवाराए-बादे-सुबहगाही[१२] है कि ज़ुल्फ़,
ऐ जाने-शबाब[१३] दोशे-सीमीं पे[१४] तेरी,
धुनकी हुई रात की सियाही है कि ज़ुल्फ़?

---

१. गढ़ा २ महीनों-वर्षों (समय) से ३. बरफ़ जैसा ४. क़दम ५. व्यतीत होती हुई आयु ६. ब्रह्माण्ड के दृश्य ७. जीवन के कारवान ८. गुलाब के रंग की मदिरा ९. संसार के दुखों का १०. कभी समाप्त न होने वाला सिलसिला ११. केश १२. प्रभात-समीर का हिंडोला १३. यौवन की जान (युवती) १४. रजत कंधों पर

काकुल[1] खुल कर बिखर रही है गोया,
नरमी से नदी गुज़र रही है गोया,
आँखें तेरी झुक रही हैं मुझ से मिलकर,
दीवार से धूप उतर रही है गोया।

◇ ◇ ◇

हम रहने हैं तिश्ना[2] छक के पीने के लिए,
गिरदाब[3] में फंसते हैं सफ़ीने[4] के लिए,
जीते हैं तो मरने के लिए जीते हैं,
मरते हैं तो बेदरेग[5] जीने के लिए।

◇ ◇ ◇

दिन होते न ज़र्दरू[6], न रातें ही सियाह,
भूले से भी इक लब[7] पे न आती कभी आह,
इन्सान के दिल को न छू सकते आलाम[8],
मेरा सा अगर शफ़ीक़[9] होता अल्लाह।

◇ ◇ ◇

तक़दीर की ये दरोग़बानी[10], अफ़सोस!
बर्ताव ये रहमत[11] के मनाफ़ी[12], अफ़सोस!
फ़ाक़े का शिकार हैं करोड़ों बन्दे,
अल्लाह की ये वादा-ख़िलाफ़ी, अफ़सोस!

---

१. केशों की लट २. प्यासे ३. भंवर ४. नाव ५. निःसंकोच ६. पीले मुँह वाले ७. होंट ८. दुख ९. स्नेही १०. झूठ बोलना ११. अनुकम्पा १२. विरुद्ध

पछताई सबा[1] जुल्फ़ की खुशबू बन कर,
अरमान भागे फ़िज़ा[2] में जुगनू बन कर,
देखा जो हिज्र[3] में सू-ए अंजुम[4],
टपकी आंखों से रात आंसू बनकर।

◇ ◇ ◇

अलफ़ाज़[5] हैं नागन सी जवानी के डसे,
अनफ़ास[6] महकते हुए होंटों में बसे,
यूं दिल को जगा रहा है तेरा लहजा[7],
जिस तरह सितार के कोई तार कसे।

◇ ◇ ◇

जाने वाले क़मर[8] को रोके कोई,
शब[9] के पैके-सफ़र[10] को रोके कोई,
थक के मेरे जानू पे वो सोया है अभी,
रोके रोके सहर[11] को रोके कोई।

◇ ◇ ◇

क़रनों[12] अभी टूटेंगे हज़ारों तारे,
मर मे अभी गुज़रेंगे करोड़ों धारे,
इन्सान बनने में है अभी वक्त बहुत,
अब तक तो फ़क़त[13] दुम झड़ी है प्यारे।

---

१. प्रभात-समीर २. शून्य ३. जुदाई ४. सितारों की ओर ५. शब्द ६. श्वास ७. स्वर ८. चांद ९. रात १०. रात्रि-दूत ११. सुबह १२. शताब्दियों तक १३. केवल